इग्नू
जन-जन का
विश्वविद्यालय

BANC-102

सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान का परिचय

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

मानव विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ

विशेषज्ञ समिति

प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव
पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष,
मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली
विश्वविद्यालय, दिल्ली
वर्तमान निदेशक, भारतीय
मानवविज्ञान सर्वेक्षण

प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना
पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. के. के. मिश्रा
कुलपति, उत्कल संस्कृति विश्वविद्यालय,
उत्कल, भुवनेश्वर, पूर्व प्रो. एवं अध्यक्ष,
मानवविज्ञान विभाग, हैदराबाद
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. आर सिवा प्रसाद (सेवानिवृत्त)
मानवविज्ञान विभाग
वर्तमान में मानद प्रोफेसर
ई-लर्निंग सेंटर, हैदराबाद
विश्वविद्यालय, हैदराबाद

प्रो. एस. एम. पटनायक
कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय
उत्कल, भुवनेश्वर

प्रो. मिनी भट्टाचार्य
मानवविज्ञान विभाग, गुवाहाटी
विश्वविद्यालय, गुवाहाटी

प्रो. नीता माथुर
समाजशास्त्र संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

प्रो. रश्मि सिन्हा
मानव विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. पल्ला वेंकटरमना
मानव विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. रुखशाना जमान
मानव विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

डॉ. के. अनिल कुमार
मानव विज्ञान संकाय
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

खंड	इकाई लेखक
खंड 1 प्रकृति और क्षेत्र विस्तार	
इकाई 1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानः अर्थ, क्षेत्र और प्रासंगिकता	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का इतिहास और विकास	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 3 अन्य शाखाओं एवं विभिन्न अनुशासनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध	डॉ. केया पांडे, मानव विज्ञान विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ प्रोफेसर विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण
खंड 2 आधारभूत सिद्धांत	
इकाई 4 समाज	प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्तमान निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण
इकाई 5 संस्कृति	डॉ. रूखशाना ज़मान, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
इकाई 6 संस्था-I : नातेदारी, परिवार और विवाह	डॉ. रूखशाना ज़मान, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली इकाई 5 एवं 6 द्वारा संपादित प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 7 संस्था-II : आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थान	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
खंड 3 सैद्धांतिक परिपेक्ष्य	
इकाई 8 शास्त्रीय सिद्धांत	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली
इकाई 9 संरचना और प्रकार्य के सिद्धांत	प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्तमान निदेशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण
इकाई 10 समकालीन सिद्धांत	प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

खंड 4 क्षेत्रीयकार्य (फील्ड वर्क)	
इकाई 11 मानवविज्ञान में क्षेत्रीय कार्य परंपराएं	प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण
इकाई 12 फील्ड वर्क करते हुए	डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू इकाई 12 प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना, पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली द्वारा संपादित
इकाई 13 प्रविधि और तकनीक	प्रो. विनय कुमार श्रीवास्तव, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण डॉ. रूखशाना जमान, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू संपादित
प्रायोगिक निर्देशिका	डॉ. रूखशाना जमान, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. रूखशाना जमान, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली.

सामान्य संपादक : डॉ. रूखशाना जमान, डॉ. मीतू दास, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली.

अनुवादक : डॉ. राजेश कुमार, हिंदी अधिकारी, जामिया मिलिया इस्लामिया विश्वविद्यालय, दिल्ली (इकाई 1 से 13)
श्रीमती नीधू कुमारी, फ्रीलांसर (प्रायोगिक निर्देशिका)

पुनरीक्षण : डॉ. कुमकुम श्रीवास्तव

भाषा संपादक : डॉ. पंकज उपाध्याय, अकादमिक परामर्शदाता, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली.

अकादमिक परामर्शदाता : डॉ. पंकज उपाध्याय, डॉ. मोनिका सैनी, मानव विज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली.

पाठ्यक्रम समन्वयक : डॉ. रूखशाना जमान, मानवविज्ञान संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू नई दिल्ली.

कवर डिजाइन : डॉ. अविटोली जिमो, फोटो क्रेटिड : हार्दिक, गौरव, दवांगी, विजुअल (दृश्य) मानव विज्ञान प्रयोगशाला, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

मुद्रण उत्पादन

श्री राजीव गिरधर
सहायक कुलसचिव (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी, इग्नू, नई दिल्ली

सुश्री सुमति नय्यर
अनुभाग अधिकारी (प्रकाशन)
एम.पी.डी.डी, इग्नू, नई दिल्ली

श्री सुरेश कुमार
सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

जनवरी, 2020

© इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2019

ISBN-81-978-93-89969-12-2

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस कार्य का कोई भी अंश इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की लिखित अनुमति के बिना किसी भी रूप में मिमियोग्राफ (मुद्रण) द्वारा या अन्यथा पुनः प्रस्तुत करने की अनुमति नहीं है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बारे में और अधिक जानकारी विश्वविद्यालय के कार्यालय, मैदान गढ़ी, नई दिल्ली–110 068 से प्राप्त की जा सकती है।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से कुलसचिव, एमपीडीडी द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित ।

लेजर कम्पोजिंग : राजश्री कम्प्यूटर्स, V-166A, भगवती विहार, (नजदीक सेक्टर–2, द्वारका), उत्तम नगर, नई दिल्ली–110059

मुद्रक : पी. स्क्वायर सॉल्यूशन्स, एच-25, साईट-बी, इण्डस्ट्रीयल एरिया, मथुरा

BANC-102 पाठ्यक्रम परिचय

पाठ्यक्रम प्रस्तुतिकरण

सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान शीर्षक के अन्तर्गत समाज और संस्कृति के अध्ययन को शामिल किया गया है। विषय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान दुनिया भर में विभिन्न समाजों और संस्कृतियों को उद्देश्यपूर्ण और विषयगत दोनों रूपों से समझकर पक्षपात और पूर्वाग्रहों से दूर करते हुए उनके सापेक्ष महत्व को प्रस्तुत करना हैं। पाठ्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षार्थियों को सामाजिक संस्थाओं और मानवीय समाजों का निर्माण करने वाली सांस्कृतिक विशेषताओं को समझने के लिए तैयार करना है।

अधिगम परिणाम

इस पाठ्यक्रम को पढ़ने के बाद शिक्षार्थियों को सक्षम होना चाहिए।

i. सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञान के उद्भव, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और आधारशिला की व्याख्या करने में;

ii. एक समाज में विभिन्न संस्थानों की पहचान करने और समाज में उपस्थित सांस्कृतिक पहलुओं को जानने में;

iii. सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के विभिन्न सिद्धांतों और उपागमों पर चर्चा करने; और

iv. सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य कैसे आयोजित किया जाता है, इसका वर्णन करनें में।

पाठ्यक्रम में चार खंड एवं एक प्रायोगिक निर्देशिका है। प्रत्येक खंड में व्यवस्थित रूप से कुछ इकाईयां हैं। कुल तेरह इकाईयाँ हैं। अब देखते हैं कि हमने प्रत्येक खंड में क्या चर्चा की है।

खंड 1 : पहला खंड सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के एक वैज्ञानिक अनुशासन के रूप में उसके उद्भव और उसकी बुनियादी समझ के साथ शिक्षार्थियों को परिचित कराता है। यह खंड सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के अनुशासन के शुरुआती घटनाक्रमों से संबंधित है। जिसमें ब्रिटेन और अमेरिका में इस विषय के विकास और उससे जन्में विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को प्रस्तुत करता है कि क्यों, ब्रिटिश मानवविज्ञानी समाज को और अमेरिकी मानवविज्ञानी संस्कृति पर जोर देते हैं। भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान की वृद्धि और विकास भी परिलक्षित होता है। शिक्षार्थी इस बात की भी जानकारी हासिल कर सकेगें कि यह विषय अन्य विषयों जैसे समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, इतिहास, राजनीति विज्ञान आदि के साथ किस प्रकार की समानताएं अथवा भिन्नताएं रखता हैं।

खंड 2 : दूसरा खंड समाज और संस्कृति की अवधारणा में रूपों और प्रक्रियाओं के अध्ययन से संबंधित है। यह खंड उन सामाजिक संस्थाओं को ध्यान में रखता है जो समाज के आधार स्तंभ हैं। सामाजिक समूह, रिश्तेदारी, विवाह और परिवार की अवधारणाएं, धार्मिक विचारों और अनुष्ठान, प्रथाओं, आवश्यकता का उत्पादन, उपभोग और विनिमय। इस खंड को पढ़ते हुए शिक्षार्थी यह

समझने में सक्षम होंगे कि समाज के अभिन्न अंग बनाने वाली संस्थाओं के साथ संस्कृति को कैसे जोड़ा जाए। समाजों में संस्थाएं सार्वभौमिक हैं हालांकि, यह सांस्कृतिक विविधताएं हैं जो विविधता लाती हैं।

खंड 3 : तीसरा खंड सिद्धांतों और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करता है। यह खंड मानव समाज और संस्कृति का अध्ययन करते हुए कुछ व्यवहारों से भी संबंधित हैं। इस खंड से शिक्षार्थी विभिन्न सामाजिक सिद्धांतों के प्रति अंतर्दृष्टि प्राप्त करेंगे और यह भी जानेगें कि मानव वैज्ञानिक सिद्धांतों ने किस प्रकार समाज के नजरिए को बदला है। विषय के प्रारंभिक चरण में इस बात पर ध्यान केंद्रित किया गया है कि मानव का विकास कैसे हुआ था। इस क्रम में मानव के प्रसार, समाज के प्रकार्यों और संरचनाओं के साथ व्यवहार को भी समझना शामिल है। इक्कीसवीं सदी में मानव विज्ञान लेखन में स्त्री स्वर को शामिल करने और आधुनिकता से उत्तर आधुनिकता के स्थानांतरित स्वरूपों में परिवर्तन के बारे में बताया गया है।

खंड 4 : आखिरी खंड में शिक्षार्थियों को मानव विज्ञान के हॉलमार्क कहे जाने वाले फील्डवर्क अथवा क्षेत्रकार्य और उसकी विस्तृत परंपरा के बारें में बताया गया है। यह खंड क्षेत्र(फील्ड) में डेटा संग्रह के दौरान किए जाने वाले क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क) का संचालन करने की बारीकियों, उपकरण और तकनीकों के उपयोग, फील्ड से लेखन और प्रस्तुति के लिए डेटा का संकलन, विश्लेषण और विश्लेषण के बाद शोध (थीसिस) या प्रोजेक्ट रिपोर्ट लेखन पर गहराई से चर्चा की गई है। यह खंड शिक्षार्थियों को स्वंय से मानवशास्त्रीय फील्डवर्क करने के लिए तैयार करेगा।

प्रायोगिक निर्देशिका :

व्यावहारिक निर्देशिका शिक्षार्थियों को शोध रूपरेखा तैयार करने में सहायता करेगी। यह शिक्षार्थियों के लिए एक मार्गदर्शक है जो किसी विषय की अवधारणा एवं शैली के अनुरूप चरणबद्ध तरीके से शोध रूपरेखा (सिनाप्सिस) तैयार करने की प्रक्रिया से परिचित कराता है।

हम आपके अध्ययन व सफलता की कामना करते हैं। आशा है यह पाठ्य सामग्री आपको अपने निर्धारित लक्ष्य प्राप्त करने में सहायता करेगा।

शुभकामनाएं !

पाठ्यक्रम BANC-102 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान का परिचय

खंड 1	प्रकृति और क्षेत्र विस्तार	
इकाई 1	सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानः अर्थ, क्षेत्र और प्रासंगिकता	9
इकाई 2	सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान का इतिहास और विकास	23
इकाई 3	अन्य शाखाओं एवं विभिन्न अनुशासनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध	41
खंड 2	आधारभूत सिद्धांत	
इकाई 4	समाज	57
इकाई 5	संस्कृति	74
इकाई 6	संस्था-I : नातेदारी, परिवार और विवाह	90
इकाई 7	संस्था-II : आर्थिक, राजनीतिक और धार्मिक संस्थान	109
खंड 3	सैद्धांतिक परिपेक्ष्य	
इकाई 8	शास्त्रीय सिद्धांत	127
इकाई 9	संरचना और प्रकार्य के सिद्धांत	143
इकाई 10	समकालीन सिद्धांत	157
खंड 4	क्षेत्रीयकार्य (फील्ड वर्क)	
इकाई 11	मानवविज्ञान में क्षेत्रीयकार्य परंपराएं	175
इकाई 12	फील्ड वर्क करते हुए	186
इकाई 13	प्रविधि और तकनीक	200
	प्रायोगिक निर्देशिका	217
	सुझावित अध्ययन	236

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 1

प्रकृति और क्षेत्र विस्तार

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

इकाई 1
सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानः अर्थ, क्षेत्र और प्रासंगिकता 9

इकाई 2
सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान का इतिहास और विकास 23

इकाई 3
अन्य शाखाओं एवं विभिन्न अनुशासनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध 41

इकाई 1 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान अर्थ; क्षेत्र और प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

1.0 प्रस्तावना

1.1 समाज और संस्कृति

1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान

1.3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का क्षेत्र

1.4 सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानवविज्ञान की प्रासंगिकता

1.5 सारांश

1.6 सन्दर्भ

1.7 प्रगति की जांच हेतु उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद शिक्षार्थी सक्षम होंगे :

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान की व्याख्या करने में;
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बीच अंतर करने के कारणों को समझाने में कि किस संदर्भ में इन विषयों को विकसित किया गया है;
- सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान सीखने के अनुप्रयोग या दायरे को समझाने में; तथा
- यह समझाने में कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान में प्रशिक्षित होना क्यों महत्वपूर्ण है।

1.0 प्रस्तावना

सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बारे में जानने के लिए विद्यार्थी को पहले समाज के बारे में जानना चाहिए और यह भी जानना चाहिए कि संस्कृति क्या है? उस का क्या संबंध है और वे किस प्रकार से इस विषय से भिन्न है। हम में से अधिकांश लोग इन संस्थाओं को जीवन के रूप में देखते हैं, हम इस तथ्य पर कभी भी ध्यान केन्द्रित नहीं करते कि समाज और संस्कृति प्राकृतिक पर्यावरण की तरह नहीं हैं, वे प्रदत्त नहीं है और वे किसी भी दिव्य हस्तक्षेप से नहीं बनाए गए हैं। हालांकि लंबे समय तक लोग मानते थे कि समाज भगवान की एक रचना थी और संस्कृति भी कुछ ऐसी ही थी जिसे दैवीय ठहराया गया था। आइए

योगकर्ता : प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

उदाहरण हेतु भोजन की बात करें, या उसकी बात करें जो हम खाते हैं। वास्तव में दुनिया भर में अधिकांश लोग वही खाते हैं जिसे वे खाने योग्य मानते हैं , दूसरे शब्दों में केवल कुछ खाने योग्य होता है, जिसे एक मानव शरीर पचा सकता है, लेकिन कुछ ऐसे हैं जिन्हें विश्वास है की सब कुछ खाया जाना चाहिए। इसी प्रकार ऐसे खाद्य पदार्थ भी हैं जो जैविक अर्थों में भोजन नहीं होते हैं, पर लोगों का एक समूह उसे भोजन मानता है ,तो दूसरा नहीं। कई लोगों को उनका धर्म कुछ चीजों को खाने से मना करता है और वर्जित खाद्य पदार्थों को खाना एक पाप की श्रेणी में रखा जाता है।

लेकिन अगर हम इन सभी वर्जित बातों पर ध्यान केन्द्रित करते हैं और बौद्धिक दृष्टिकोण से उनकी जांच करते हैं तो यह स्पष्ट हो जाता है कि इन्हें धर्म नहीं बल्कि संस्कृति के माध्यम से मना किया जाता है। ये सांस्कृतिक निषेध अक्सर इतिहास का एक उत्पाद होते है या परिस्थितियों का एक उत्पाद है, और इनमें तर्कसंगतता की बात हो सकती हैं। (हैरिस **1985**) फिर समाज और संस्कृति क्या है, इस पर ध्यान देते हुए हम इस निष्कर्ष पर आते हैं कि ये मानव रचनाएं हैं, लेकिन यह निश्चित रूप से तर्कसंगत नहीं हो सकती है कि ऐतिहासिक समय पर विकसित होने वाले सामाजिक उथल–पुथल के चलते यह निश्चित रूप से सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संदर्भ के अंतर्गत हैं। यह भी सत्य है, न तो समाज और न ही संस्कृति स्थिर है। वे समय के साथ विकसित होते हैं और बदल जाते हैं। किसी एक समय में जिसे गलत माना जाता है, वह दूसरे समय सही हो जाता है। इस इकाई में हम इन अवधारणाओं की गहन जांच करेंगे।

1.1 समाज और संस्कृति

हर शिशु सामाजिक संबंधों की एक बनी बनाई व्यवस्था में पैदा होता है, जिसमें जन्म के साथ ही उसके कुछ रिश्तेदार होते हैं, जैसे उसके माता–पिता, भाई–बहन, दादा–दादी और अन्य। इस प्रकार ये रिश्तेदार संबंधों के एक बड़े समूह का हिस्सा बनते हैं जिसे हम एक रिश्तेदारी का तंत्र (नेटवर्क) कहते हैं। जो एक कबीले या जाति जैसे बड़े समूह का भी हिस्सा हो सकते है। हम सब के पास एक समाज है जिसमें एक विशिष्ट जनजाति, कोई जातीय समूह या एक देश, राष्ट्र या भाषाई समुदाय की तरह पहचान होती है। किसी समूह से संबंधित भावना को सामाजिक पहचान कहा जाता है। इस पहचान में कई परतें हो सकती हैं। इस तरह यदि कोई भारतीय है, तो हम यह कह सकते हैं कि हम भारतीय समाज से संबंधित हैं। भारतीय समाज के भीतर, हम कह सकते हैं कि हम किसी एक धार्मिक समुदाय के हैं, जैसे की हिंदू या ईसाई होने के नाते हम किसी जनजाति या जाति समूह से संबंधित हो सकते हैं।

प्रत्येक स्तर पर हम कह सकते है कि समाज रिश्तों का एक तंत्र (नेटवर्क) है और रिश्तों का एक विशेष सेट/समुच्च्य हमें एक विशेष पहचान देता है। कुछ पहचान वे हैं जिनके साथ हम पैदा हुए हैं, इन्हें निर्धारित रूप में जाना जाता है। और कुछ पहचान वे हैं जिन्हें हम बाद में जीवन से अर्जित करते हैं और इन्हें अर्जित पहचान के रूप में जाना जाता है। जिन पहचानों के साथ हम पैदा हुए हैं, वे हमें एक विशेष प्रकार के व्यक्ति बनाते हैं। किसी विशेष भाषा या यहां तक कि भाषाओं को बोलने, एक प्रकार का भोजन करने, जीवन को विशेष तरीके से जीने और विशेष देवताओं की पूजा–अर्चना करने और कुछ चीजों में विश्वास करना सम्मिलित है। इस अंतिम पहलू को विश्व दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता है। हम में से प्रत्येक जिस दुनिया में रहते हैं उसके बारे में एक विशेष संज्ञान है और हमारे पास जीवन की परिस्थितियों से निपटने हेतु निर्धारित तरीके हैं।

इस तरह हम रिश्तों के एक प्रवृत्ति में पैदा होते है जिन्हें हम समाज कहते हैं। एक विशिष्ट समय और स्थान में पैदा होने के आधार पर हम ऐसा करने और सोचने के कुछ तरीके प्राप्त करते हैं जिसे हम संस्कृति कहते हैं। संस्कृति जीवन का एक तरीका है, कार्यों को करने का एक अभ्यास है, और अर्थों का एक समुच्च्य है जिसे हम अपने आस–पास की दुनिया पर आरोपित करते हैं। वह संस्कृति ही है जिसके माध्यम से हमारे चारों ओर सबकुछ अर्थपूर्ण हो जाता है। वह संस्कृति है जो एक दूसरे से अलग बनाती है, वह अर्जित की जाती है और यह अनुवांशिक गुण नहीं है।

मनुष्य के रूप में हम एक प्रजाति है और एक प्रजाति के रूप में हमारे आम लक्षण हैं। इन मानवीय लक्षणों में से एक क्षमता प्रतीकात्मक व्यवहार या अमूर्त सोच की क्षमता है। मनुष्य कल्पना कर सकते हैं, वे वस्तुओं और उसके अर्थ का भी पता लगा सकते हैं। इस तरह इंसान, भाषा को नियोजित कर सकता है उसे जहां लगता है वह मनमाने ढंग से उन्हें अर्थ प्रदान करने लिए प्रयोग कर सकता हैं । यही कारण है कि वह बहुत सारे हैं, वास्तव में कई मानव भाषाएँ, एक दूसरे से अलग है । इस तरह इंसानों की ध्वनि भाषा के रूप में व्यवस्थित हो सकती है। जहां ध्वनियां वह अर्थ ले लेती हैं, जो उन्हें मनमाने ढंग से सौंपा जाता है। यही वजह है कि अनेक भाषाएँ हैं, वास्तव में कई मानव भाषाएँ दूसरे से अलग हैं । उदाहरण हेतु हम अलग–अलग तरीकों से किसी मेंढक को मेंढक कह सकते हैं और यह संभव है। क्योंकि इनमें से कोई भी ध्वनि अलग–अलग भाषाओं में मेंढक हेतु प्रयुक्त नहीं है पर किसी भी तरह से वह ध्वनि मेंढक के नाम से संबंधित है। यही कारण है कि मनुष्य के प्रजाति के रूप में सबसे अधिक विविधता हमारे भोजन करने, कार्य करने और जीवन यापन में दिखती है। हम अपने आनुवंशिकी या प्रवृत्ति से नहीं रहते हैं, अपितु एक स्व–अधिग्रहीत तंत्र के माध्यम से रहते हैं जिसे संस्कृति कहा जाता है। (कापलान और मैनर्स 1972) लेकिन, किसी संस्कृति हेतु उसे किसी समाज का हिस्सा भी होना चाहिए। क्योंकि, पहले से ही सांकेतिक संस्कृति एक अंतर्निहित विशेषता नहीं है, संस्कृति का अधिग्रहण किया जाता है और मानव किस प्रकार संस्कृति अधिग्रहित करता है, यह समाज में पैदा होने और जीवन यापन पर निर्भर करता है। हम समाज में इस तरह से जीना सीखते हैं कि समाज स्वयं को पुनरू सषजित कर सकें। हम सभी को उन नियमों के अनुसार व्यवहार करना सीखना होता हैं जिन्हें, हम सामाजिक मापदंड कहते हैं। इन सामाजिक मापदंडों और नियमों को उन प्रक्रियाओं को संचरण (transmission) के माध्यम से अधिग्रहित किया जाता है जिन्हें हम समाजीकरण (socialisation) कहते हैं। या कहें जिस तरह से कोई बच्चा अपने वयस्कों को देखकर कुछ सीखता है। हम जीवन के उन तरीकों और अर्थों को भी प्राप्त करते हैं या सीखते हैं जो व्यवहार हेतु हमें रूपरेखा प्रदान करते हैं, जैसे कि क्या खाएं और कैसे खाएं, क्या पहनें और कैसे पहनें, समाज के सही सदस्य की तरह कैसे व्यवहार करें और कैसा बने और कैसा न बनें, ताकि सामाजिक रूप से बहिष्कृत न हों। आगे बढ़ने, बोलने, सामूहिक अर्थ के ज्ञान को संस्कृति के रूप में जाना जाता है और संस्कृति को प्राप्त करने की प्रक्रिया को संस्कृतिकरण कहा जाता है।

ये दोनों प्रक्रियाएं साथ साथ चलती हैं । हमने यह जाना है कि माता–पिता और बच्चे के बीच एक रिश्ता होता है, यही समाजीकरण है और हम इस रिश्ते के बीच एक उचित व्यवहार होता है और जिसे संस्कृतिकरण कहा जाता है।

प्रगति की जांच करें1

1. सामाजिक पहचान क्या है?

....

....

....

2. विश्व–दृष्टि के अर्थ को समझाएं ?

....

....

....

3. आप निर्धारित और प्राप्त स्थिति से क्या समझते हैं?

....

....

....

4. क्या संस्कृति एक आनुवंशिक रूप से विरासत में मिली विशेषता है?

....

....

....

5. समाजीकरण और संस्कृतिकरण क्या है?

....

....

....

6. संस्कृति एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक किस प्रकार संचारित होती है?

....

....

....

1.2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान

सामाजिक मानवविज्ञान मुख्य रूप से सामाजिक संबंधों के अध्ययन से जुडा हुआ है। इस अध्ययन में परिवार, रिश्तेदार, मानदंडों और व्यवहार के नियमों और संरचनाओं का अध्ययन करते हैं जो समाज का गठन करते हैं।

सांस्कृतिक मानवविज्ञानी, प्रतीकों और अर्थ प्रणालियों का अध्ययन करते हैं और वे उन मूल्यों और मान्यताओं का अध्ययन करते हैं जो अंतर्निहित सिद्धांत हैं, जो प्रक्रिया का मार्गदर्शन करते हैं। हालांकि दोनों संबंधित शाखाएं विभिन्न पहलुओं पर जोर देती हैं और अपने विषय वस्तु को अलग–अलग दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। उदाहरण हेतु, यदि कोई सामाजिक परिप्रेक्ष्य से राजनीतिक संस्थानों का अध्ययन कर रहा है तो वह राजनीतिक व्यवस्था की संस्थागत संरचना का अध्ययन करेगा, जैसे कि पंचायत है, फिर कर्मियों की संरचना, उनके अधिकार और कर्तव्यों, पदानुक्रम और मानदंडों और सिद्धांतों पर बातचीत आदि। यदि कोई सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से राजनीतिक क्षेत्र का अध्ययन कर रहा है, तो वह संरचनात्मक पहलुओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करेगा बल्कि सत्ता, रणनीतियों और रणनीतियों की वार्ता पर ध्यान केंद्रित करेगा जिससे शक्ति का उपयोग किया जाता है। सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य से कोई भी पदों पर ध्यान केंद्रित नहीं कर सकता है, लेकिन जिन प्रक्रियाओं से इन्हें प्राप्त किया जाता है उन पर कर सकता है। सांस्कृतिक मानवविज्ञानी उन प्रतीकों पर ध्यान केंद्रित करते है जिनके माध्यम से शक्ति प्रकट होती है और शक्ति को व्यक्त करने और बनाए रखने में अर्थों का सूक्ष्म उपयोग होता है।

ऐतिहासिक रूप से सामाजिक मानव विज्ञान परिप्रेक्ष्य फ्रांसीसी स्कूल ऑफ मास, हबर्ट और दुर्खाइम (Durkheim) के बाद ब्रिटेन और यूरोपीय महाद्वीप में विकसित किया गया था। सामाजिक मानवविज्ञान परिप्रेक्ष्य के कामकाज में ए.आर रैडक्लिफ–ब्राउन, ईई इवांस–प्रिचर्ड, ब्रोनिस्ला मालिनोव्स्की, रेमंड फर्थ और ब्रिटिश स्कूल के अन्य विद्वान थे। उन्होंने भारतीय मानवविज्ञानी जैसे, एम.एन श्रीनिवास और अन्य लोगों को प्रभावित किया। इस प्रकार पदानुक्रम, सहयोग और संघ के ढांचे, व्यवहार के औपचारिक नियम और बातचीत के मानदंड सामाजिक मानवविज्ञान को विश्लेषण का केंद्र बनाते हैं।

ऐतिहासिक कारणों से सांस्कृतिक मानवविज्ञान संयुक्त राज्य अमेरिका में विकसित हुआ। अमेरिका में सांस्कृतिक मानवविज्ञान के संस्थापक फ्रांज बोआज थे। उनके बाद उनके छात्रों जैसे कि अल्फ्रेड क्रॉबर, मार्गरेट मीड, रूथ बेनेडिक्ट, रूथ बेंजेल और डेरिल फोर्ड, मेलविले हर्सकोविट्स, राल्फ लिंटन जैसे अन्य प्रतिष्ठित विद्वानों ने उनका अनुसरण किया। यह वास्तविक रूप से मौजूदा सामाजिक संबंधों के मुकाबले सुपर–ऑर्गेनिक (सांस्कृतिक) पहलुओं के साथ अधिक जुड़ा हुआ है क्योंकि, अमेरिका के अधिकांश देशज समुदायों को उपनिवेशीकरण की प्रक्रिया में तितर–बितर कर दिया गया था या उन्हें हटा दिया गया था। संस्कृति, ऐतिहासिक और पर्यावरणीय पहलुओं की भी जांच करती है क्योंकि संस्कृति को ऐतिहासिक रूप से व्युत्पन्न और पर्यावरण के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है। इस तरह एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण से हम जांच करेंगे कि सांस्कृतिक लक्षण किस प्रकार विकसित होते हैं, फैलते हैं, आस–पास के अनुकूल होते हैं और वे अर्थों की एक बड़ी प्रणाली का हिस्सा किस प्रकार बनते हैं।

जब सामाजिक संबंधपरक दृष्टिकोण में अर्थ और मूल्यों जैसे सांस्कृतिक पहलुओं पर भी चर्चा की जाती है, वे संरचनाओं पर प्राथमिक ध्यान में परिवर्तित हो जाते हैं। इसी प्रकार एक सांस्कृतिक दृष्टिकोण में संरचनाएं केवल एक पृष्ठभूमि बनाती हैं जिसके विरुद्ध अर्थ और प्रतीकों का संदर्भ दिया जाता है।

प्रगति की जांच करें 2

7. सामाजिक मानवविज्ञानी जब समुदायों का अध्ययन करते हैं तब किस बात पर ध्यान केंद्रित करते हैं?

....

....

....

8. सांस्कृतिक मानवविज्ञानी समाज के किस पहलू पर जोर देते हैं?

....

....

....

9. ब्रिटेन और यूरोप के कुछ शुरुआती विद्वानों का नाम बताएं जिन्होंने सामाजिक मानवविज्ञान के क्षेत्र में काम किया था ।

....

....

....

10. सांस्कृतिक मानवविज्ञान के क्षेत्र में कार्य करने वाले संयुक्त राज्य अमेरिका के आरंभिक विद्वानों में से कुछ का नाम बताइए ।

....

....

....

1.3 सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान का क्षेत्र

जब आप इस विषय को सीख रहे हैं तब आप सोच रहे होंगे कि सामाजिक या सांस्कृतिक मानवविज्ञानी होने का दायरा क्या है? ज्ञान के वे कौन से क्षेत्र हैं जिन्हें यह विषय छूता है? यह जानकर आपको प्रसन्नता होगी कि किसी भी अन्य विषय की तुलना में सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान का सबसे व्यापक दायरा है, क्योंकि यह सीधे मानव परिस्थिति से संबंधित है। अगर हम स्वयं को इंसानों के रूप में पढ़ते हैं, तो यह वह विषय है जिस पर हम भरोसा करते हैं। मानवविज्ञान में, इंसानों को वृहत रूप में अथार्त समग्र रूप में देखा जाता है न कि शरीर (चिकित्सा विज्ञान) या एक दिमाग (मनोविज्ञान) या एक पशु–प्रजाति (प्राणीशास्त्र) के रूप में। बेशक इतिहास और भूगोल जैसे विषय हैं, जो सांस्कृतिक मानवविज्ञान के समीप आते हैं लेकिन वे भी मानव के सभी पहलुओं से जुड़े हुए नहीं हैं। इस तरह एक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के रूप में आप इतिहास का अध्ययन करेंगे लेकिन इसके अंतर्गत न केवल लिखित या दस्तावेजी इतिहास की आवश्यकता है, जिसपर इतिहासकार आमतौर पर भरोसा करते हैं, अपितु हम इसमें मौखिक इतिहास और जातीय–इतिहास को भी

शामिल करेंगे। मानवविज्ञानी, मानव को अपने अध्ययन के प्राथमिक विषय के रूप में मानते हैं, उनके लिए लोगों के इतिहास के संस्करण को जानना अधिक महत्वपूर्ण है क्योंकि यह संस्करण है, जो कि क्रिया को प्रेरित करता है और लक्षित करता है। लोग अपने विश्वासों और जाति समूह के अनुसार या उनके लोगों के इतिहास के अपने संस्करण के अनुसार व्यवहार करते हैं कि लोग कैसा आचरण करेंगे। मानवविज्ञान,अकादमिक समुदाय क्या प्रलेखित करता है उसकी चिंता नही करता है अपितु, बड़े पैमाने पर आम लोगों के साथ संबंधित हैं। यह बाद का संस्करण है जो कि इतिहास को निर्धारित करता है और सामूहिक मानव क्रियाविधि को आकार देता है।

यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि मानवविज्ञान, मनोवैज्ञानिक की तरह व्यक्ति पर ध्यान केंद्रित नहीं करता है, यह केवल सामूहिक और सार्वजनिक क्षेत्र में रुचि रखता हैं। समाज और संस्कृति दोनों समाज के दायरे में आते हैं, हालांकि दोनों समाज हेतु साझा हैं परन्तु इसमें व्यक्तिगत चरित्र या प्रवृत्ति का उल्लेख नहीं है। समाज के प्रति व्यक्तियों का संबंध, इस अर्थ में कि कैसे व्यक्ति को समाज के माध्यम से आकार मिलता है, और किस प्रकार व्यक्ति अपने कार्यों और व्यवहार के माध्यम से समाज को पुनरुत्पादित करते हैं, मानवविज्ञानी हेतु चिंतन का विषय है। उदाहरण के लिए, मनुष्य की शादी ऐसे ही किसी से नहीं हो सकती है, दूसरे शब्दों में, जिसे वे अपने जीवन साथी के रूप में चुनते हैं उनकी सांस्कृतिक अनुकूलता (कंडीशनिंग) पर निर्धारित किया जाता है। भले ही कोई यह मानता है कि यह तो एक स्वतंत्र विकल्प है। उदाहरण के लिए, अमेरिकी समाज में, विवाह को व्यक्तिगत पसंद से निर्धारित किया जाता है परन्तु विवाह के वास्तविक अध्ययन से संकेत मिलता है कि विवाह का बहुमत शायद कभी नस्लीय, कभी वर्ग विभाजन में भी ले जाता है। लेकिन साथ ही जैसे–जैसे समाज अंतर–नस्लीय विवाह के संबंध में मूल्यों को बदल रहा है उससे अक्सर सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तन एक–दूसरे के साथ घटित होते हैं।

उदाहरण के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका में एक अश्वेत राष्ट्रपति के चुनाव, शहरीकरण और शिक्षा ने संयुक्त राज्य अमेरिका के कुछ भागों में (आमतौर पर उदारवादी दृष्टिकोण के कारण) शादी के पैटर्न में एक बड़ा परिवर्तन किया है। (बायलिक 2017) कुछ शोध केंद्रों के आंकड़ों से पता चलता है कि 2015 में अंतर–जातीय या अंतर–नस्लीय विवाह पैटर्न की दिशा में सभी नव–विवाहितों में 1967 में तीन से पांच गुना वृद्धि हुई है । 2015 में सभी विवाहित लोगों में से 10% अंतर–नस्लीय या अंतर–जातीय विवाह करने वाले दिखते हैं। बेशक इस 10% के विवाह की घटना से पता चलता है कि संयुक्त राज्य अमेरिका के लोग लंबे समय तक प्रजातीय विभाजन में शादी (विवाह) नहीं करते थे। जिसका ग्रॉफ हाल के दिनों में ही ऊपर उठ रहा है, फिर भी बहुत से आंकड़े संकेत देते हैं कि सांस्कृतिक पूर्वाग्रहों को समाज के रास्ते में आकर सही मायने में खोला जा रहा है, यहां तक कि जब वह वैचारिक रूप से ऐसा ही है। मानवविज्ञानी, खुले समाज में ऐसे अवरोधों की घटना की जांच हेतु बेहद उपयुक्त प्रशिक्षण दे रहे हैं , जहां अंतर–जातीय विवाह हेतु कोई कानूनी या सामाजिक बाधा नहीं है। तथ्य से यह भी संकेत मिलता है कि ,परिवर्तन हो रहा है । मानवविज्ञानी पूर्वाग्रहों के प्रारंभिक अस्तित्व का अध्ययन करने और परिवर्तन के गहरे कारणों का विश्लेषण करने में संलग्न होते है ।

विवाह के बदलते अर्थ, बदलते रंग, प्रतीकों और मूल्यों तथा विचारधारा में परिवर्तन की खोज सांस्कृतिक मानवविज्ञानी द्वारा किया जाता है। सामाजिक मानवविज्ञानी संरचनात्मक परिवर्तन, बदलते आर्थिक और शक्ति समीकरणों एवं पदानुक्रमों को बदलने की खोज करते है । अमेरिका में एक अश्वेत राष्ट्रपति के चुनाव, सामाजिक पदानुक्रम और सत्ता संरचनाओं में परिवर्तनों को

इंगित करता है साथ ही यह मूल्यों के सांस्कृतिक परिवर्तनों को भी इंगित करता है। यह कहने की बात नहीं है कि सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के बीच श्रम का ऐसा विभाजन होता है जिसे अधिकांश विद्वान इन सभी कारकों की तलाश करते है। इस तरह हम हाल के दिनों में संयुक्त शब्द सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान दोनों का उपयोग करना पसंद करते हैं।

आम तौर पर सामाजिक मानवविज्ञान समाज के पहलुओं पर केंद्रित है जैसे कि सामाजिक स्तरीकरण, सामाजिक संस्थाओं की अर्थव्यवस्था, राजनीति, धर्म और कानून से संबंधित अध ययन। सामाजिक मानवविज्ञान अध्ययन का एक प्रमुख पहलू नातेदारी , परिवार और विवाह से संबंधित है। इससे संबंधित शास्त्रीय कार्यों की प्रुमख पुस्तकें थीं, *अफ्रीकन सिस्टम ऑफ किन्शिप एंड मैरिज, अफ्रीकन पोलिटिकल सिस्टम, विचक्राफ्ट अमंग द अजांदे , द न्यूर्स , न्यूर रिलिजन आदि*। सामाजिक मानवविज्ञानियों ने विभिन्न प्रकार के सामाजिक परिवर्तनों का भी अध्ययन किया है। मानवविज्ञान में मार्क्सवाद को शामिल करने के साथ– साथ इतिहास के पहलू को भी मानवविज्ञान विश्लेषण में शामिल किया गया था।

सांस्कृतिक मानवविज्ञानी कई और दिशाओं में आगे बढ़ने में सक्षम हैं जिसमें अमेरिकी स्कूल ने पारिस्थितिकीय मानवविज्ञान, मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान, चिकित्सा मानवविज्ञान, भाषाई मानवविज्ञान, ऐतिहासिक मानवविज्ञान की शुरुआत की और अब हमारे पास मानवविज्ञान की कई दूसरी शाखाएं भी मौजूद हैं जैसे, उद्यम मानवविज्ञान, महिलावादी मानवविज्ञान, पर्यटन मानवविज्ञान, आपदा और जोखिम प्रबंधन मानवविज्ञान। इसके अतिरिक्त अन्य कई क्षेत्र है जिसमें मानवविज्ञानी संलग्न हैं। यहां तक कि चिकित्सा विज्ञान,अनुप्रयुक्त (एप्लाइड) मेडिसिन, या कार्यक्षेत्र(फील्ड) में दवाओं (मेडिसिन) को ले जाने में भी मानवविज्ञानी की विशेषज्ञता की आवश्यकता है। टीकों के बारे में लोगों को शिक्षित करने, मलेरिया और वेक्टर जनित रोगों की रोकथाम करने, एचआईवी– एड्स और अन्य (संक्रामक) रोगों की रोकथाम एवं प्रबंधन के लिए मानवविज्ञान की विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। (स्ट्रेंग, 2009) मानवविज्ञानी सभी मामलों में मानव अस्तित्व के इन पहलुओं को गहराई से विश्लेषण और डेटा संग्रह में गुणात्मक विधि को अपनी पद्धति को लाने का प्रयत्न करते हैं। मनोविज्ञान और इतिहास जैसे पहले से मौजूद विषयों के साथ जहां हम प्रतिस्पर्धा करते है तो मानवविज्ञानी अपने अस्तित्व को उनके तरीके से न्यायसंगत बताते हैं।

मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञानी, मनोवैज्ञानिकों से अलग प्रकार के होते हैं, जबकि मनोवैज्ञानिक मानते हैं कि मानव मस्तिष्क और मन सभी इंसानों में एक समान हैं। शास्त्रीय मनोवैज्ञानिक अध्ययनों ने भी सभी मनुष्य दिमागों को समान रूप से माना है, मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान ने व्यक्तिगत दिमाग और संस्कृति के बीच संबंधों की छानबीन करता है। (बोरगुइगनन 1979)

संस्कृति और व्यक्तित्व स्कूल के संस्थापकों के अनुसार सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान के उप–अनुशासन के रूप में मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञान का गठन हुआ था, अगर हम प्रौढ़ व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाले बचपन के अनुभवों के फ्रायड के सिद्धांत को स्वीकार करते हैं तो, विभिन्न संस्कृतियां बच्चों का लालन–पालन और अभ्यास अलग अलग तरीके से करती हैं और एक ही संस्कृति में लालन–पालन किये गए सभी बच्चों पर एक सामूहिक संस्कृति का प्रभाव होता है। इसी कारण से कुछ व्यक्तियों में सामूहिक व्यक्तित्व के लक्षण होते हैं जो इसी तरह की प्रक्रिया से आते है। जैसे कि शिशुओं के भोजन करने, कपड़ा पहनने, शौचालय जाने और नींद आदि के पैटर्न प्रशिक्षण के लिए मोटे तौर पर सांस्कृतिक मानदंडों के माध्यम से

अनुकूलित होते हैं। उदाहरण के तौर पर दक्षिण एशिया में अधिकतर बच्चे अपनी मां के साथ सोते हैं और माता–पिता और वयस्क लोग उन्हें गोद में या पीठ पर रखते हैं। इसके विपरीत अमेरिकी समाज में शिशुओं को एक अलग कमरे में और बिस्तर में रखा जाता है और प्राम अथार्त स्ट्रॉलर्स में ले जाया जाता है न कि गोद में। बच्चे की देख–भाल में इन बुनियादी अंतरों से वयस्क व्यक्तित्व में अंतर पैदा होने की संभावना है। समकालीन मनोवैज्ञानिकों ने भी अपने काम में अंतर–सांस्कृतिक (क्रॉस कल्चरल) व्यक्तित्व लक्षणों की अवधारणा को सम्मिलित करना प्रारंभ कर दिया है। (श्वार्टज, व्हाइट और लुत्ज 1992)

प्रतिबिंबन

सिगमंड फ्रायड (1856–1939) ने मनोविश्लेषण के प्रस्ताव (मनोविज्ञान = मन और विश्लेषण = दिमाग के हिस्सों को व्यक्तिगत रूप से देखने के लिए प्रस्तावित किया कि वे कैसे संबंधित हैं)। यह पहला सिद्धांत है जो बचपन के माध्यम से विकास के चरणों का वर्णन करता है। सिद्धांत का मूल आधार यह है कि जैविक आग्रह किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व को आकार देने के लिए जिम्मेदार चरणों की एक श्रृंखला के माध्यम से एक व्यक्ति को स्थानांतरित करता है।

फ्रायड ने, प्रारंभिक बाल्यावस्था व्यक्तित्व विकास के सिद्धांत को उनके सार्वभौमिक मानव लक्षणों को बड़े पैमाने पर जैविक रूप से निर्धारित करने के आधार पर बताया था। फ्रायड के मुताबिक तीन चरणों में विशेष रूप से ओरल, अनल और ओडीपल शामिल हैं और सांस्कृतिक माध्यमों द्वारा हम चलना, फिरना शौचालय जाना आदि में अपने अभिभावकों से सीखते हैं।

सुप्रसिद्ध सामाजिक मानवविज्ञानी जॉन बेएटी ने उल्लेख किया है कि सामाजिक मानवविज्ञानी वास्तव में तीन विभिन्न स्तरों के आंकड़ों के बारे में बात करते हैं (i) वास्तव में क्या होता है, (ii) लोग क्या सोचते हैं तथा (iii) वे क्या सोचते हैं, उनके कानूनी एवं नैतिक मूल्य (बेएटी, मूरे और सैंडर्स 2006:)। इसतरह सर्व प्रथम सांख्यिकीय विश्लेषण के माध्यम से अंतर– जातीय विवाह को स्थापित किया गया जिसके बारे में हमने पहले ही चर्चा की है। इस प्रकार के आंकड़ो से मानवविज्ञानी संतुष्ट नहीं होते। अब तो वे लोग विभिन्न जातियों, उनके मानदंडों और बातचीत के मूल्यों और यहां तक कि उनके इतिहास और संदर्भ के बीच सामाजिक बातचीत की गहराई तक जाते हैं। सांस्कृतिक मानवविज्ञानी की तरह वे अब जाति और नैतिक पहलुओं के प्रतीकात्मक महत्व की जांच करते है । इस बातचीत में बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करेगा कि लोग विवाह संस्था की व्याख्या किस प्रकार करते हैं और उसे किस प्रकार से समझते हैं। इस तरह मानवविज्ञानी बहुआयामी विश्लेषण में संलग्न होते हैं जो किसी घटना के विभिन्न आयामों को ध्यान में रखते हैं।

प्रगति की जांच करें 3

11. सामाजिक मानवविज्ञान की विषय वस्तु बताएं ।

....

....

....

....

12. सांस्कृतिक मानवविज्ञान की विषयवस्तु बताएं ।

....

....

....

1.4 मानवविज्ञान की प्रासंगिकता

मानवविज्ञान सिद्धांत में यह भी स्वीकार किया जाता है कि, वास्तविक सामाजिक परिस्थितियां सतह पर दिखाई नहीं देती हैं लेकिन वास्तविकता वह नहीं होती जो दिखती है, अपितु इसकी परतें बहुत गहरी होती हैं। और इसकी वास्तविकता को देखने के लिए किसी को गहराई में जाना होता है। यही कारण है कि मानवविज्ञान तरीकों के अंतर्गत लंबी अवधि और एक विशेष स्थिति या क्षेत्र के अध्ययन की आवश्यकता होती है। इसमें गहन अध्ययन अधिकांशतः गुणात्मक होता है जहां किसी डेटा या आंकड़ों पर निर्भर रहने की बजाय असली मनुष्य पर निर्भर होता है। यही वह स्थान है जहां मानवविज्ञानी,अर्थशास्त्रियों से काफी अलग हैं। क्योंकि उनके लिए गरीबी जैसी अवधारणाएं केवल सांख्यिकीय आंकड़े नहीं हैं बल्कि वास्तविक मनुष्य के जीवन और उनके जीवन की वास्तविक स्थितियों से संबंधित हैं। इस प्रकार मानवविज्ञानी छुपे तथ्यों पर प्रकाश डालते हैं।

नृवंशविज्ञान विधि (एथेनोग्राफी) जिसे किसी विशिष्ट क्षेत्र का समग्र अध्ययन करने की मानवविज्ञान विधि के रूप में जाना जाता है, प्रायः वास्तविक लोगों के साथ समक्ष साक्षात्कार के माध्यम से तथ्य सकंलन, व्यक्तिगत आख्यान, जीवन इतिहास के रूप में तथ्यों का उपयोग किया जाता है। इसमें मानवविज्ञानी लंबे समय तक उन लोगों के साथ रहते हैं जिनका अध्ययन किया जाता है और जिनके जीवन को सूचनादाता द्वारा साझा किए जाता हैं। इसे मानवविज्ञान की भाषा में गोइंग नेटिव कहा जाता है। इस प्रकार मानवविज्ञान क्षेत्र में मानवविज्ञानी की व्यक्तिपरक बातचीत शामिल है जिसे अब किसी वस्तु के रूप में नहीं देखा जा सकता है। सूचनादाता और मानवविज्ञानी आपस में बातचीत करते हैं जहां मानवविज्ञानी की व्यक्तिपरकता को उपेक्षित नहीं किया जा सकता है। दूसरे शब्दों में कहें तो मानवविज्ञानी किसी प्रयोगशाला की स्थिति के अनुसार कोई निष्क्रिय, वस्तुगत, वैज्ञानिक पर्यवेक्षक नहीं हैं, वह एक सजीव इंसान है जो दूसरे मनुष्यों के संपर्क में रहता है और इस प्रकार उसकी भावनाएं जीवित रहती हैं। क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) दूसरों के साथ किसी इंसान की बातचीत है और जिसमें दोनों ओर से एक संज्ञानात्मक और अवधारणात्मक तत्व रहता है। मानवविज्ञानी की उपस्थिति इस क्षेत्र को बदल देती है क्योंकि दूसरे लोग इस क्षेत्र के निवासी होने के कारण वहां के मौजूदा विद्वान के साथ बातचीत करना शुरू करते हैं। (क्लिफोर्ड और मार्कस 1990) यह व्यक्तिपरकता जिसे तथाकथित वैज्ञानिक निष्पक्षता की कमी कहा जाता है वही मानवविज्ञान पद्धति की 'हॉल मार्क' (विशेषता) है।

मनुष्यों के साथ इस तरह की घनिष्ठ बातचीत से अक्सर वह आंकड़े सामने आते हैं जो किसी भी सतही या अल्पकालिक विधियों द्वारा कभी भी सुलभ नहीं हो सकते। इस प्रकार मानवविज्ञान का दायरा मानव जीवन के हर आयाम तक जाता है परन्तु इस तरह से इन क्षेत्रों को मानवीय चिंता और सहानुभूति के साथ उपयोग किया जाता है। इस प्रकार मानवविज्ञानी उन लोगों के पक्ष समर्थक होते हैं जिनका वे अध्ययन या प्रतिनिधित्व करते हैं, और विभिन्न मंचों पर उनके लिए संघर्ष करते हैं। मानवविज्ञानी के शोध क्षेत्र में प्रवेश करने के उपरांत वह

उनके साथ समानुभूतिपूर्ण संबंध स्थापित करता है और उनके जैसा सोचने लगता है। इस प्रकार शोधार्थी भी एक कार्यकर्ता बन जाता है या वह उस ज्ञान को लागू करता है जिसे उन्होंने दूसरे लोगों की भलाई के लिए प्राप्त किया है, उस ज्ञान को वह अपना मानने लगता है। अधिकांश मानवविज्ञानी अपने सूचनादाताओं को 'मेरे लोग' के रूप में देखते हैं और अक्सर उनके साथ आजीवन संबंध स्थापित कर लेते हैं।

एक विषय की शाखा के रूप में मानवविज्ञान का सबसे महत्वपूर्ण योगदान जातिकेंद्रिकता (ethnocentrism) से आगे बढ़ना सीखना है। चूंकि सभी मनुष्यों का जीवन एक विशेष तरीके से निर्मित होता है, इसलिए लोगों के मन में यह आम धारणा है कि उनके जीवनयापन का तरीका सबसे अच्छा तरीका है। यहां तक कि यदि लोग इन अवधारणाओं को जानबूझकर नहीं समझते हैं, तो कुछ बातों को हम अपने उपयोग हेतु सामान्य के रूप में स्वीकार करते हैं और जीवनयापन के उपयुक्त तरीके पर विचार नहीं कर पाते है क्योंकि हम इस सुविधा क्षेत्र (कम्फर्ट जोन) से बाहर ही नहीं निकल पाते हैं। कुछ लोगों के लिए कई प्रकार की सांस्कृतिक प्रथाएँ और रीति–रिवाज, 'घृणास्पद', 'चौंकाने वाले' या अजीब दिखाई पड़ते हैं जबकि वे पूरी तरह से स्वीकार्य और उन लोगों के लिए 'सामान्य' हो सकते हैं जो उनका अभ्यास करते हैं। जैसे कि कुत्तें का मांस खाना, पुरुषों का स्कर्ट पहनना, महिलाओं का सिर मुंडवाना, बाल विवाह, कन्या– भ्रूण हत्या आदि प्रथाएं उन लोगों के लिए चौकाने वाली और घृणा उत्पन्न करने वाली हो सकती हैं जो ऐसा नहीं करते हैं।

दूसरी ओर मानवविज्ञानी को अपनी स्वीकृति की सीमाओं को फैलाने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है, भले ही वे खुद को इन रीति–रिवाजों में नहीं ढाल सकते हैं पर वे उन लोगों के लिए कम से कम इन रीति–रिवाजों को उचित ठहराने का प्रयास करते हैं। उदाहरण के लिए फेलिक्स पैडेल (2011) के उस कार्य का अध्ययन करें जिसमें उन्होंने उड़ीसा के कोंध जनजातियों के बीच मानव बलिदान को रेखांकित किया है, जहां यह दिखाया गया है कि ये रीति–रिवाज का समर्थन नहीं कर रहे हैं पर उन्होंने यह दिखाया है कि किस प्रकार ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा इसे छिन्न–भिन्न किया गया था। जिससे संबंधित आंकड़ों का इस्तेमाल कोंध जाति को आदिम जाति और बर्बर जाति के रूप में पेश करने के लिए किया था। फेलिक्स पैडेल ने अभिलेखीय और क्षेत्र के आंकड़ों के उपयोग के माध्यम से भी प्रदर्शित किया है कि इस मामले में ब्रिटिश हस्तक्षेप और जनजातियों का उनके द्वारा निर्दयी रूप से क्रूर उत्पीड़न था जिसे मानव बलिदान के वास्तविक चित्रण को अधिक दुखयुक्त दिखाता है।

इस प्रकार मानवविज्ञानविदों का प्राथमिक कार्य वास्तविक आंकड़ों की जांच करना है और स्वतंत्र विचार के साथ रूढ़िवाद और पूर्वाग्रहों से ऊपर उठकर विश्लेषण करना है। मानवविज्ञानविदों के लिए समाज और संस्कृति दोनों है। अब वे इस बात के लिए दृढ़ प्रतिबद्ध हैं कि वे किसी भी सांस्कृतिक या सामाजिक प्रथा का मूल्यांकन न करें और अपने संदर्भ में चीजों को समझें। जाति–केन्द्रिकता से सार्वभौमिक मानवता की ओर जाना मानवविज्ञान का 'हॉलमार्क' है। मानवविज्ञान के विद्यार्थी के रूप में आपको विविधता की सराहना करनी चाहिए और गैर–न्यायिक बातों को सीखना चाहिए कि मनुष्य अपनी संस्कृति के अनुसार जीते हैं और संस्कृति आनुवंशिक नहीं होती है बल्कि, अलग–अलग समाज के सदस्यों के रूप में उसे अधिग्रहित किया जाता है। यह हमारी मानवीय विशेषता है कि हमारा जीवन और रीति-रिवाज एक दूसरे से अलग है और मानवविज्ञान की प्रासंगिकता यह है कि वह एक ऐसा विज्ञान है जिसमें विविधता को समझा जाता है और उसका सम्मान करना सीखा जाता है। मानवविज्ञानी दूसरे लोगों के तौर–तरीकों का बहुत सम्मान करते हैं और उनका प्रयास रहता है कि दूसरे

भी इसका प्रयास करें ताकि अधिक से अधिक लोग सांस्कृतिक विविधता की प्रासंगिकता और सहिष्णुता को समझ सकें, न कि केवल अपने ही तौर–तरीकों को जानें।

प्रगति की जांच करें 4

13. गोइंग नेटिव शब्द का वर्णन करें।

....

....

....

14. व्यक्तिपरकता क्या है?

....

....

....

15. मानव विज्ञान के अध्ययन करने की कोई दो प्रासंगिकता बताएं ।

....

....

....

1.5 सारांश

इस ईकाई में आपने सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के बारे में कुछ मूल बातें सीखी हैं। विद्यार्थी को यह बताया गया है की समाज और संस्कृति के बीच अभिन्न संबंध है और किस प्रकार ये दोनों धरती पर मनुष्यों के रूप में हमारे अस्तित्व के हॉलमार्क हैं। संस्कृति के बिना कोई मनुष्य नहीं है और समाज के बिना वहां कोई संस्कृति नहीं हो सकती। क्योंकि हम व्यवहार, मूल्यों और प्रथाओं को समाज के सदस्यों के रूप में सीखते हैं और अगर लोग सांस्कृतिक मानदंडों के अनुसार व्यवहार नहीं करते है तो समाज के स्थायी संबंधों को एक व्यवस्था के रूप में पुनरू सृजित नहीं किया जा सकता है ।

इस प्रकार सामाजिक समूहों जैसे जाति, जनजाति और जातीय समूहों ने विवाह की संस्थाओं के माध्यम से स्वयं को पुनः प्रस्तुत करते हैं। लेकिन लोगों को सांस्कृतिक रूप से इस तरह से विवाह करने की शर्त यह है कि वे अपने समाजों को पुनः सृजित करें।

हमने सीखा है, कैसे एक अनुशासन के रूप में मानवविज्ञान को मानववैज्ञानिक तरीकों और कार्यप्रणाली के रूप में व्यापक दायरा मिला है और किस प्रकार वह मानव समाज और मानव व्यवहार से संबंधित लगभग किसी भी घटना को समझने में सक्षम है। इस प्रकार धर्म, राजनीति, दर्शन, मनोविज्ञान और अर्थशास्त्र सभी मानवविज्ञान के दायरे में हैं सिवाय इसके कि मानव विज्ञान समाज के इन आयामों को मानसिक रूप से मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र और राजनीतिक विज्ञान के विषय को उनके शास्त्रीय रूप में स्वीकार करता है। आज इतिहासकारों सहित कई लोग इसे अपना रहे हैं जिसे हम नृ–वंशविज्ञान (एथनोग्राफी) पद्धति के रूप में

जानते हैं। क्षेत्रीय कार्य (फील्डवर्क) अथवा लोगों से सीधे आंकड़ों/तथ्यों को एकत्रित करने का कार्य मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक भूगोलविद और इतिहासकार भी कर रहे हैं। पार–सांस्कृतिक (क्रॉस कल्चरल) मनोविज्ञान में भी गुणात्मक विश्लेषण और आख्यान संग्रह के मानवविज्ञान तरीकों का उपयोग किया जाता है। संस्कृति को मनोवैज्ञानिक और ऐतिहासिक अनुसंधान में एक प्रमुख चर के रूप में देखा जाता है। मानवविज्ञानी में विभिन्न संस्कृतियों से संवाद करने की अनूठी क्षमता होती है और इसका तात्पर्य एक ही भाषा बोलना नहीं है,अपितु इसका मतलब है कि आप संज्ञानात्मक बाधा को तोड़ने में सक्षम हैं जो आम तौर पर विभिन्न संस्कृतियों या यहां तक कि वर्ग और विभिन्न सामुदायिक पृष्ठभूमि के व्यक्तियों के बीच मौजूद है। अगली इकाई में हम सामाजिक और सांस्कृतिक मानवविज्ञान के इतिहास और विकास के पक्ष का पता लगायेगे ।

1.6 संदर्भ

बेएटी, जॉन एच.एम. (2006). *अंडरस्टेंडिंग एंड एक्सप्लेनेशन इन सोशल एंथ्रोपोलॉजी"* हेनेरेट्टा मूरे एवं टॉड सेंडर्स (संपा) एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरी, पृ. 148–159 ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी में प्रकाशित 10(1) (1959) पृ 45–57

बायलिक, क्रिस्टिन, (2017). की फैक्ट्स अबाउट रेस एंड मेरिज, "50 यीयर्स आफ्टर लविंगः वीर्जिनिया" www.pewresearch.org/fact-tank/2017/06/12/key-facts-about-race-and-marriage-50years-after-loving v-Virginia/; 9 अगस्त 2017 को 11:00 बजे पर देखा गया।

बारगूइग्नॉन, इरिका (1979). *साइकोलाजिकल एंथ्रोपोलॉजी एन इंट्रोडक्शन टू ह्यूमेन नेचर एंड कल्चरल डिफरेंस.* न्यूयार्कः हाल्ट, रिनेहर्ट एवं विंस्टन.

क्लिफोर्ड, जेम्स एवं जार्ज, ई मार्क्स (संपा) (1990). *राइंटिंग कल्चरः द पायटिक्स एंड पालिटिक्स ऑफ इथनोग्राफी,* दिल्लीः ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

इवांस प्रिटहार्ड, ई.ई. (1940). *द न्यूर,* ऑक्सफोड : द क्लेरेंडान प्रेस.

फोर्ट्स, मेयर, (1969). *किनशिप एंड द सोशल आर्डर,* शिकागोः एल्डाइन पब्लिशर्स.

हेरिस, मार्विन, (1985). *गुड टू ईटः रिड्ल्स ऑफ फूड एंड कल्चर*: इलिनियोसः वेवलेंड प्रेस.

कपलान, डेविड एवं रोबर्ट ए मैनर्स, (1972). *कल्चर थ्योरी.* इलिनियोसः वेवलेंड प्रेस.

लेविस, आई.एम. (1976). *सोशल एंथ्रोपोलॉजी इन पर्सपेक्टिवः द रिलेवेंस ऑफ सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* हार्मंड्सवर्थः पेंग्विन बुक्स.

मूरे, हेनरिट् एवं टॉड सेंडर्स (संपा) (2006). एंथ्रोपोलॉजी इन थ्योरीः इश्यूज इन इपीस्टेमोलाजी, यूएसएः ब्लेकवेल पब्लिशिंग.

पेडेल, फेलिक्स (2011). *सेक्रीफाइसिंग पीपलः इंवेसंस ऑफ ए ट्राइबल लेंडस्केप*: (यह संस्करण) नई दिल्लीः ओरिएंट ब्लैकस्वॉन (1995) ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस).

रेडक्लिफ ब्राउन, ए.आर. (1952). *स्ट्रक्चर एंड फंक्शन इन प्रिमिटिव सोसायटी*: न्यूयार्कः द फ्री प्रेस.

शैवर्ट्ज, थियोडोर, जाफरी एम. व्हाइट एवं कैथेरीन ए लूट्ज (संपा) (1993). *न्यू डायरेक्शंस इन साइकोलाजिकल एंथ्रोपोलॉजी* . कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

1.7 प्रगति की जांच के लिए उत्तर

1. किसी समूह से संबंधित होने की भावना को सामाजिक पहचान कहा जाता है। आगे समझने के लिए भाग 1.1 का संदर्भ लें ।
2. इस इकाई के भाग 1.1 को देखें ।
3. कुछ पहचान वे होते हैं, जिनके साथ हम जन्म लेते हैं इन्हें हमारे नाम, स्थिति, धर्म इत्यादि के रूप में जाना जाता है और कुछ को हम बाद में अपने जीवन में ग्रहण करते हैं। जैसे कि, हम किस प्रकार का भोजन पसंद करते हैं और किस तरह से कपड़े पहनते हैं, आदि।
4. नहीं ।
5. समाजीकरण एक प्रक्रिया है जिसके द्वारा सामाजिक मानदंडों और नियमों को अपने बड़ों से बच्चे द्वारा अधिग्रहीत किया जाता है। आगे समझने के लिए भाग 1ण्1.के पैरा 6 को पढ़ें।
6. संस्कृति एक पीढ़ी से अगली पीढ़ी तक भाषा, प्रतीकों, संस्कृतिकरण और सामाजिकता के माध्यम से पहुँचती है ।
7. भाग 1.2 देखें ।
8. इस ईकाई के 1.2. अनुभाग को पढ़ें।
9. ए.आर .रैडक्लिफ–ब्राउन, ईई इवांस–प्रिचर्ड, ब्रोंस्लालो मालिनोव्स्की, रेमंड फर्थ और अन्य।
10. फ्रांज बोआज को संयुक्त राज्य अमेरिका में सांस्कृतिक मानवविज्ञान के संस्थापक के रूप में भी जाना जाता है। उनका अनुसरण उनके छात्रों द्वारा किया गया जैसे कि अल्फ्रेड क्रॉबर, मार्गरिट मीड, रुथ बेनेडिक्ट, रूथ बेंजेल डेरिल फोर्ड, मेलविले हर्सकोविट्स, राल्फ लिटन और अन्य।
11. समझने के लिए भाग 1.3 के पैरा 4 को देखें ।
12. भाग 1.3 के पैरा 5 को देखें ।
13. भाग 1.4 के अनुभाग 2 को देखें ।
14. भाग 1.4 के अनुभाग 3 को देखें ।
15. भाग 1.4 के अंतिम अनुभाग को देखें ।

इकाई 2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान का इतिहास और विकास

इकाई की रूपरेखा

2.0. प्रस्तावना

2.1 मानव विज्ञान क्यों?

2.2. सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

2.3. मानव विज्ञान अध्ययन की एक शाखा के रूप में

2.4. मानव विज्ञान के ब्रिटिश और अमेरिकी संप्रदाय

2.5. भारत में मानव विज्ञान का विकास

2.6. सारांश

2.7. संदर्भ

2.8. अपनी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

अधिगम का उद्देश्य

इस इकाई में शिक्षार्थी निम्न बातों पर विमर्श करने में सक्षम होंगे:

- सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान विषय की उत्पत्ति;
- राजनीतिक और आर्थिक संदर्भ सहित उनके विकास के लिए ऐतिहासिक समय सीमा;
- औपनिवेशिक काल में इन दोनों शाखाओं में अंतर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि; तथा
- भारत में मानव विज्ञान के विकास का इतिहास।

2.0 प्रस्तावना

मानव अध्ययन के रूप में परिभाषित मानव विज्ञान उन सभी विषयों में से सबसे अधिक विरोधाभासी है, जो अध्ययन हेतु सबसे योग्य माने जाते थे। इसका सीधा सा कारण यह है कि संसार भर में मानव समुदायों ने अपने समाज और जीवन के तरीके को उस तरह से ग्रहण किया है जैसा उन्हें प्राप्त हुआ है, और वास्तविकता यह है कि उनके द्वारा इस संबंध में कोई प्रश्न नहीं पूछा गया। प्रश्न और संदेह जो कि कुछ लोगों के मन में स्वाभाविक रूप से थे उनका निराकरण मौजूदा ब्रह्मांड विज्ञान और धार्मिक सिद्धांतों के माध्यम से किया गया था। इस इकाई में आप यह सीखेंगे कि लिखना और पढना जानने के कई सदियों बाद तथा खगोलीय विद्या, गणित, जैविक और अन्य सभी विज्ञानों के विकास के बाद आखिरकार मानव ने स्वयं, अपनी कहानी जानने पर क्यों ध्यान केन्द्रित किया?

योगकर्ता : प्रो. सुभद्रा मित्रा चन्ना पूर्व प्रोफेसर, मानवविज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

2.1 मानव विज्ञान क्यों ?

16वीं सदी के आसपास यूरोपीय दार्शनिक सोच में एक बड़ा बदलाव आया क्योंकि इनके यात्रा और व्यापार के मामले ने संसार भर में अपने भू–राजनीतिक सीमाओं का विस्तार किया। वहीं दूसरी ओर चर्च और उसकी उक्ति के साथ मोहभंग बढ़ रहा था ।

फ्रांसीसी क्रांति के साथ–साथ अमेरिकी क्रांति ने यह एहसास करवाया कि सामाजिक व्यवस्था दैवीय उत्पत्ति पर आधारित नहीं थी अपितु यह एक ऐसी व्यवस्था थी जिसे मानव गतिविधि और संस्थाध्प्रतिनिधित्व द्वारा समूल हिलाया–डुलाया जा सकता था। विश्व के बाकी हिस्सों से संपर्क में आने के बाद यूरोपवासियों को यह एहसास हुआ कि मानव और समाज न केवल शारीरिक रूप से भिन्न–भिन्न रूप व आकार में पाए जा सकते हैं अपितु, उनके रीति–रिवाज, जीवन–शैली और सोचने के ढंग में भी भिन्नता पाई जा सकती है। डार्विन व वॉलेस द्वारा जैविक विकास के सिद्धांतों को तैयार करने से पहले ही फ्रांसीसी विचारक और स्कॉटिश प्रबुद्ध दार्शनिको ने मानव के सामाजिक विकास की परिकल्पना भी कर रहे थे जिसमें समाज के दैव्य सृजन न होकर मानव द्वारा निर्मित होने की संभावना थी। दूसरी संस्कृतियों से संपर्क में आने पर सामाजिक विकास के विचार प्रेरित किये गए क्योंकि, यूरोपीय विचारकों ने उन्हें स्वयं के अतीत से जोड़कर संस्कृतियों की विविधता की व्याख्या करने की कोशिश की। ऑगस्ट कॉम्ट ने मानव समाज के चरण दर चरण विकास के अपने सिद्धांत को सुझाया, जिसने इस दिशा में विचारवान सोच को स्थापित किया। कॉम्ट का शोध प्रबंध यह था कि मानव समाजों का विकास, धर्मशास्त्र, अध्यात्म और विभिन्न कारणों से हुआ है जिसने यूरोपवासियों को विकासवादी पैमाने पर सबसे ऊपरी स्थान पर रखा। जब यूरोपवासियों ने दूसरे लोगों को देखा तब उन्होंने यह सोचा कि वे अपने से निम्नतर स्तर के लोगों को देख रहे हैं और साथ ही साथ पीछे की ओर देख रहे हैं। (ऑरून, 1965 देखें)।

जहाँ कॉम्ट ने इंसानों के प्रतिबिंबित संकायों और तर्कसंगत विचारों की ताकत पर ध्यान केंद्रित कियाय वही सामाजिक विकास के सिद्धांत में एक और प्रमुख योगदानकर्ता हर्बर्ट स्पेंसर थे, जो चार्ल्स डार्विन के समकालीन भी थे, और उनके सामाजिक और जैविक विकास के सिद्धांतों ने कुछ हद तक अधिव्यापन भी किया था। स्पेंसर का विवादास्पद तरीका यह है कि समाज, प्राकृतिक प्रणालियों की तरह व्यवहार करते हैं, जहां वे सभी हिस्से (लोग) जो कमजोर होते हैं या जिनके जीवित रहने की संभावना कम होती है उन्हें खत्म कर दिया जाता है, जिसे श्योग्यतम की उत्तरजीविताश की लोकप्रिय अवधारणा के रूप में स्थापित किया गया और जिसे डार्विन के विकास के सिद्धांत में गलत तरीके से तैयार किया गया था। स्पेंसर का सिद्धांत यूरोप के उभरते औद्योगिक पूंजीवाद द्वारा औपनिवेशिक शासन का विस्तार इस बात पर आश्रित था कि पूंजीवाद व्यक्तिगत उद्यमी पर थोपा गया था। अन्य यूरोपीय विद्वानों के साथ–साथ कॉम्टे और स्पेंसर दोनों ही सामाजिक घटनाओं के अध्ययन के लिए उस दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर रहे थे जिसे सकारात्मक दृष्टिकोण के रूप में जाना जाता था।

प्रतिबिंब

सकारात्मक दृष्टिकोण ने इस बात की वकालत की है कि, समाज भी वैज्ञानिक खोज के लिए किसी अन्य वस्तु की तरह ही मानव का अध्ययन और विश्लेषण करने में सक्षम थे। दूसरे शब्दों में, समाज के विद्वान भी वैज्ञानिक ही थे जो अपने विश्लेषणात्मक कौशल को

समाज में अलग–अलग वस्तुनिष्ठ तरीके को लागू कर सकते थे वह भी उसी प्रकार जैसे, वैज्ञानिक अपनी जाँच के माध्यम से करते हैं। समाज की तुलना जीवों से की गई और जीवों की तरह ही समाज के उद्विकास और भविष्यगामी नियम भी निर्मित हुए।

19वीं सदी के सबसे महान विचारकों में से दो विचारक, फ्रायड और मार्क्स ने क्रमशः मानव जैव–मनोवैज्ञानिक और सामाजिक विकास के अपने 'वैज्ञानिक' सिद्धांतों को आगे बढ़ाने के लिए इस सकारात्मकवादी दर्शन का प्रयोग किया। डार्विन की तरह बाद में इन दोनों पर सामाजिक विज्ञान और मानवविज्ञान के विकास का प्रभाव पड़ा। सकारात्मक युग में सिद्धांत निर्माण अत्यधिक जिज्ञासा से प्रेरित थे, जो कि यूरोपवासियों की अपनी उत्पत्ति के बारे में था। अंततः मानव की उत्पत्ति और विकास के संबंधी इस खोज ने औपचारिक रूप से अध्ययन की एक शाखा को विकसित किया जिससे मानव विज्ञान अथवा मानव का विज्ञान कहा जाता है। मानव विज्ञान की यह मूल परिभाषा दो मूलभूत अवधारणाओं को इंगित करती है, जो इस शाखा की स्थापना के बारे में सूचित करते हैं। और उनमें से पहली अवधारणा यह है कि मानव अपने आप में वैज्ञानिक विश्लेषण हेतु सभी दृष्टिकोणों से एक विशिष्ट विषय था और दूसरी अवधारणा यह है कि वास्तव में मानवीय होना ही मानव होना था।

यह हमें ज्ञान युग के एक अन्य दार्शनिक प्रतिमान में लाता है। प्रकृति/संस्कृति विरोधाभास और महिला/पुरुष द्वंद्व पर इसकी अतिसंवेदनशीलता ने यूरोपीय पुनर्जागरण के लगभग सभी प्रमुख विचारकों द्वारा मान्यता प्राप्त की और स्थापित की गई जैसे कि फ्रांसिस बेकन, फ्रायड और यहां तक कि डार्विन। कारण यह था कि उनके संकाय के साथ मानव प्रकृति पर हावी होने के लिए नियत थे और यह सभ्यता को परिभाषित करने का तरीका भी था। महिलाएं, जिन्हें फ्रायड और डार्विन दोनों ने वृत्ति से प्रेरित किया था, पुरुषों के रूप में, कारणों से निर्देशित नहीं थीं। वे प्रकृति की तरह थे, जैविक प्राणियों का प्रभुत्व था और पुरुषों द्वारा भी संरक्षित किया गया था। यह मानसिकता थी जिसने सभी बौद्धिक गतिविधियों को पुरुषों के दायरे में रखा, जबकि स्त्री को घरेलू क्षेत्र तक ही सीमित रखा गया था। इसका परिणाम यह हुआ कि पश्चिम के ज्यादातर सिद्धान्तकार पुरुष हुए।

अपनी प्रगति की जाँच करें 1

1 आरंभिक विचारकों में से कुछ का नाम बताएं जिन्होंने मनुष्य और समाज के विकास के बारे में मत प्रस्तुत किए।

....

....

....

....

2 सामाजिक विकास के संदर्भ में 'योग्यता की उत्तरजीविता' की अवधारणा को किसने शुरू किया?

....

....

....

....

3 मानव विज्ञान, 'मानव का विज्ञान' के नाम से क्यों जाना जाता है। इसके दो कारण बताएं।

....

....

....

2.2 सामाजिक और सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विकास की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कोई सिद्धांत निर्वात में उत्पन्न नही होता है। यह सर्वविदित है कि कि गैलीलियो और कोपर्निकस अपने समय से आगे थे, जिसके लिए उन्हें विभिन्न परिणामों का सामना भी करना पड़ा। डार्विन का एक सिद्धांत को आगे बढ़ाने के लिए वे सही समय पर आगे आए जिसमें उत्पत्ति के बारे में बाइबल में जो लिखा गया था उसको पूरी तरह से संशय में रख दिया था, फिर भी उसे उत्साहपूर्ण स्वीकार किया जा रहा था। संसार के दूसरे हिस्सों पर यूरोप के औपनिवेशिक प्रक्रिया के दौरान मानव विज्ञान का विकास चरम पर था। व्यापार के माध्यम से स्थापित अपेक्षाकृत समान संबंध राजनीतिक प्रभुत्व और सकल शोषण में एक रूप किया जा रहा था। ट्रोटमैन (1997) ने वर्णन किया है कि ब्रिटेन के लोगों ने भारतीयों के साथ कैसा व्यवहार किया और वह भी लगभग तब तक जब तक कि वे व्यापार कर रहे थे लेकिन जैसे ही रानी विक्टोरिया के शासन की स्थापना हुई भारतीयों के रीति–रिवाज और उनकी संस्कृति को बेकार कहा गया और उन्हें 'असभ्य' कहकर खारिज कर दिया गया। पूंजीवादी अर्थव्यवस्था की बढ़ती जरूरतों के कारण उद्योगो के लिए कच्चे माल की आपूर्ति के साथ–साथ यूरोप को अपने उत्पाद बेचने के लिए बाजारों की आवश्यकता थी। यद्यपि उसी समय ज्ञानोदय अवधि जिसका विकास फ्रांसीसी और अमेरिकी क्रांति से हुआ और जिसने समानता, मानवता और स्वतन्त्रता की विचारधारा का प्रचार–प्रसार किया। खुद को 'सभ्य' मानने वाले यूरोपवासियों की यह मान्यता थी कि वे ही न्याय और लोकतंत्र संबंधी मानवीय मूल्यों के वाहक हैं। उपनिवेशवाद के साथ इस विचारधारा और नरसंहार संबंधी गतिविधियों के बीच स्पष्ट रूप से विरोधाभास था।

वह विकासवादी सिद्धान्त था जोकि दूसरें समाजों को 'आदिम' मानते हुए यूरोपीय शासन के प्रचार–प्रसार को उचित मान रहा था और उसका समर्थन कर रहा था। कॉम्टे, बेकोफेन, मेन, मैकलेनान और अन्य विद्वानों के समूह द्वारा इस विचारधारा को आगे बढ़ाया गया कि मानव समाज का विकास विभिन्न चरणों से होकर गुजरा है और यह विकास प्रक्रिया रैखिक रूप से प्रगतिशील रही है। पश्चिमी समाजों, द्वारा विकास चरम सीमा पर पहुंचा, जिनके प्रभुत्व को स्पेंसर के सिद्धान्त 'योग्यतम की उत्तरजीविका' द्वारा उचित ठहराया गया। इस प्रकार यूरोपीय लोग इसलिए सफल थे क्योंकि वे दूसरे के मुकाबले अधिक 'फिट' थे और जिन लोगों पर वे अपने उपनिवेश स्थापित कर रहे थे वे लोग 'आदिम' थे, जिनकी तुलना फ्रायड द्वारा अवयस्क बच्चों से की गई थी। डार्विन द्वारा उन्हें मानसिक रूप से कम स्तर तक विकसित माना गया था, स्तर में कमतर होने के कारण वे लोग पश्चिम के पितृसत्तात्मक, पुरुष वर्चस्व वाली सभ्यता तक नहीं पहुंच पाए थे। उदाहरणस्वरूप बेकोवेन और मैकलेनान जैसे बुद्धिजीवी मातृवंश/मातृसत्ता को मानव विकास का निम्न स्तर मानते हुए महिला वर्चस्व वाले समाज को 'पिछड़ापन' का प्रतीक मानते थे। पहले से स्थापित प्रकृति/संस्कृति, महिला/पुरुष के द्विभाजन (डाईकोटोमी) के संदर्भ में यह अनुपालन था (ऑर्टनर 1974)। चूंकि पश्चिमी समाज

धर्म और कानूनी स्तर पर पूरी तरह से पितृसत्तात्मक था, इसलिए वे श्रेष्ठ थे। वे श्रेष्ठ सभ्यता के आत्म–प्रमाणित उदाहरण भी थे, जिन्होंने दूसरों को अर्थात आदिम लोगों को 'सभ्य' करने का कार्य किया, जो तर्कसंगत था ।

अपनी प्रगति की जाँच करें 2

4 ''संसार के अन्य भागों पर यूरोप की औपनिवेशिक प्रक्रिया के दौरान मानव विज्ञान का विकास शीर्ष पर था'' यह कथन सही है या गलत, इसका उल्लेख करें।

....

....

....

5 ज्ञानोदय अवधि के दौरान फ्रांसीसी और अमेरिकी क्रांति के कारण कौन सी विचारधाराओं का प्रचार–प्रसार हुआ ।

....

....

....

2.3 मानव विज्ञान एक अध्ययन शाखा के रूप में

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में एडवर्ड बी. टायलर के मानव विज्ञान के अध्यक्ष पद पर आसीन होने के साथ ही मानवविज्ञान, अध्ययन की एक विशिष्ट शाखा के रूप में स्थापित हुआ। इस शाखा का लक्ष्य औपचारिक रूप से मनुष्य की उत्पत्ति और भिन्नता के बारे में अध्ययन और अनुसंधान करना था। डार्विन ने इस बात को दृढ़ता से स्थापित किया था कि, मानव एक जैविक प्राणी है तथा नस्लीय सिद्धान्त जो की मानव समाजों में नस्लीय अंतर लाता है, उसे विद्वानों द्वारा अस्वीकार किया गया। यदि नस्लीय मानदंड नहीं होता तो विभिन्न मानव समूहों में शारीरिक के साथ–साथ सामाजिक अंतर के दूसरे कारण तलाशने होंगें। अतः मानव विज्ञान शाखा का उद्देश्य, मानव के जैविक के साथ–साथ सामाजिक विकास की जांच–पड़ताल करना था और उनके वास्तविक रूप–स्वरूप संबंधित प्रेक्षित अंतरों एवं सामाजिक–सांस्कृतिक जीवन के बारे में वर्णन करना था। जैविक विकास की प्रक्रिया को समय से आगे देखना होगा कि मानव, वास्तव में मानव कब बने, इसलिए जैविक विकास की जड़ें प्राचीन मानवविज्ञान (पैलेओन्थ्रोपोलॉजी) अथवा मानव और पूर्व–मानवनुमों(प्री–ह्यूमन होमिनिड्स) के जीवाश्म अध्ययन और प्राइमेटोलॉजी या उच्च–स्तनपायियों के व्यवहार और शरीर विज्ञान के अध्ययन तक जाती हैं। दूसरी ओर सामाजिक विकास के अंतर्गत न केवल पूर्व–ऐतिहासिक अवशेषों और पुरातात्विक जड़ों की खोज की गई अपितु इसे मौजूदा मानव समाजों को पश्चिमी यूरोप जैसे अधिक विकसित समाजों का अवशेष माना गया।

यह अंतिम अवधारणा थी जिसने सामाजिक विकास के सिद्धान्त के आधार को तैयार किया जहां टेलर ने यह माना कि स्थानिक अंतर को अस्थायी अंतर माना जा सकता है। यद्यपि इस सिद्धान्त ने कुछ लोगों को विकासवादी सीढ़ी के निचले स्तर पर लाकर खड़ा कर दिया, तथापि यह अपने आप में इस बात पर आधारित था कि उस समय 'मानवता की आत्मिक एकता' (साइकिक युनिटी ऑफ मैनकाइंड) का सिद्धान्त किसे माना जाता था। चूंकि मनुष्य, मानव

के रूप में एक प्राणी था इसलिए यह अवधारणा थी कि वे आवश्यक रूप से एक समान सोचेगें। यह माना जाता था कि सभी मानवों की एक संस्कृति हो जिसे इंगोल्ड (1986) ने कैपिटल सहित संस्कृति का नाम दिया है। उस समय जो अंतर देखे गए उनका वर्णन यह कहते हुये किया गया कि, अलग–अलग लोगों का विकास अलग–अलग स्तर की संस्कृतियों से हुआ है और इसमें इस बात को भी जोड़ा गया किय अंततः सभी लोग एक समान स्तर की संस्कृति को अर्जित कर लेंगे जैसा कि पश्चिमी समाजों द्वारा प्राप्त किया गया है। कई बार मानव विज्ञान की आलोचना इसलिए की गई कि वह एक औपनिवेशिक शाखा थी और विशेष रूप से यह सामाजिक विकास के सिद्धान्त से जुड़ी हुई थी। वह भी 'सभ्यता' संबंधी अपनी परिभाषा (जिसे पश्चिम का प्रर्याय माना जाता था) द्वारा जो कि यूरोपकेन्द्रित (यूरोसेन्ट्रिक) थी और प्रत्यक्ष या प्रोक्ष रूप से औपनिवेशीकरण को बढ़ावा दे रही थी।

प्रतिबिंब

प्रजातिकेंद्रिकता: प्रजातिकेंद्रिकता अपनी संस्कृति को बेहतर मानने की भावना और साथ ही साथ किसी काम को सामान्य तरीके से करने की भावना के बारे में बताता है। यूरोसेन्ट्रिक परिप्रेक्ष्य यूरोपीय लोगों की इस भावना को बताता है जिसमें वे अपने समाज और संस्कृति को सामाजिक विकास की ऊंचाई पर पाते हैं और उसे सबसे सभ्य मानते हैं।

मानव विज्ञान चार प्रमुख शाखाओं में विकसित हुआ। जैविक मानव विज्ञान जो कि मानव की जैविक विविधता से जुड़ा है, भाषा विज्ञान, जो संस्कृति और भाषा से जुड़ा है, पुरातत्व जिसका संबंध मानव समाज के अतीत से है, मानव समाज और उसकी संस्कृति से सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान के रूप में। हालाँकि ये शाखाएं एक दूसरे से पूरी तरह से अनन्य नहीं हैं। समाज के रूप में रहने वाले इन मानवों के 'संस्कारी प्राणियों' के रूप में विकसित होने की तथ्यता, मानवविज्ञान के सभी पहलुओं को रेखांकित करते हैं। मानव विज्ञान के प्रारम्भिक यूरोपकेन्द्रित (यूरोसेन्ट्रिक) पूर्वाग्रह को बाद में एक अधिक सापेक्ष और मानवीय दृष्टिकोण से प्रतिस्थापित किया गया। संसार के ऐतिहासिक परिवर्तनों ने मानव वैज्ञानिक प्रतिमानों में बहुत बदलाव लाया गया।

अपनी प्रगति की जाँच करें 3

6. ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय में मानव विज्ञान के पद पर पहले पहल कौन आसीन हुए?

....

....

....

7. मानव विज्ञान की चार प्रमुख शाखाओं का नाम बताएं ।

....

....

....

2.4 मानव विज्ञान के ब्रिटिश और अमेरिकी संप्रदाय

मानव विज्ञान एवं उपनिवेशवाद का आंतरिक संबंध इस शाखा के ब्रिटिश स्वरूप के विकास से स्पष्ट होता है, जबकि मानवविज्ञान के इस विकास को अमेरिकी सांस्कृतिक परंपरा के रूप में जाना जाता है। यूरोपीय महाद्वीप में ब्रिटिश संरचनात्मक–प्रकार्यात्मक स्कूल की अकादमिक जड़ें दुर्खीम (1950) की कार्यात्मकता से निर्मित की गई थीं, जो फ्रांसीसी स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी से संबंधित थीं। संरचनात्मक–कार्यात्मक संप्रदाय ने अपने काल्पनिक सिद्धांतों हेतु शास्त्रीय उद्विकासवाविदों की आलोचना की। विकास के सिद्धांतों से दूर जाने के कारण उन्होंने अनुभववाद की ओर रुख कर लिया और क्षेत्रीयकार्य अध्ययन(फील्डवर्क) विधि को विकसित किया, जो कि वर्तमान समय मे मानव विज्ञान की कसौटी का प्रतीक बन गया है।

संरचनात्मक–कार्यात्मक संप्रदाय का यह मानना था कि प्रत्येक समाज में सामाजिक संबंधों के रूप में एक संरचना होती है, और इस संरचना के प्रत्येक भाग का एक कार्यात्मक तर्क होता है, जो संपूर्ण रूप से योगदान करता है। संरचनात्मक–कार्यात्मकता का मूल आधार सांस्कृतिक सापेक्षता के इस तरीके पर टिका हुआ था, कि संस्कृतियां उसी संस्कृति की उच्च अथवा न्यून अभिव्यक्ति नहीं थीं अपितु व्यापक दृष्टिकोण से संस्कृतियां अपने आप में पूरी तरह कार्यात्मक थीं। प्रत्येक समाज को बाध्य किया गया था। इसकी तुलना एक जीव से की गयी है, जिसका प्रत्येक भाग पूरे शरीर के क्रियाकलाप में योगदान देता है। इस प्रकार तुलनात्मक पद्धति का उपयोग करके धर्म और नातेदारी जैसी संस्कृतियों के हिस्सों का अध्ययन नहीं कर सकता है, जैसा कि शास्त्रीय उद्विकासवादी सिद्धांत में किया गया था, इसके द्वारा स्थापित भागों के बीच प्रकार्यात्मक संबंध, संबंधित लोगों के साथ घनिष्ठता और अंतरंग बातचीत का परिणाम थी, लेकिन एक समाज को इसकी संपूर्णता और गहराई से अध्ययन करने की आवश्यकता थी। इस दृष्टिकोण के लिए मुख्य रूप से ब्रिटिश मानव विज्ञानी जिम्मेदार थे, जो इसका उपयोग शासन के उन ताकतों के तहत ऐसे समाजों का अध्ययन करने के लिए करते थे, जिन्हें स्थिर संतुलन में रहने हेतु नियंत्रित किया जाना जरुरी था। प्रशासकों की इच्छा कुछ हद तक अकादमिक अनुमानों में प्रतिबिम्बित हुई।

प्रतिबिंब

सांस्कृतिक सापेक्षता : सांस्कृतिक सापेक्षता सैद्धांतिक स्थिति को संदर्भित करती है जहां किसी भी संस्कृति के पहलुओं को प्रासंगिक के रूप में देखा जाता है, जो कि उनके स्वयं के संदर्भ में कार्यात्मक होती है और दूसरी संस्कृतियों के समान नहीं होती है। यह विकासवादी सिद्धांत की आलोचना थी और कार्यात्मक सिद्धांत की आधार थी।

क्षेत्रीय कार्य (फील्डवर्क) विधि को ब्रोनिस्लो मालिनोव्स्की के ट्रोब्रिआंड द्वीप समूहों के लंबे समय के अध्ययन द्वारा शास्त्रीय आकार प्रदान किया गया था। मालिनोव्स्की एक समर्पित फील्डवर्कर बन गए वह भी स्वेच्छा से नहीं, बल्कि विश्व युद्ध की अनिवार्यता की वजह से। उनकी *अर्ग्रोनौट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक* (1922) नामक पुस्तक को मानव विज्ञान के छात्र धर्मग्रंथ की तरह पढ़ते हैं।

अधिकांश उपनिवेशों में कार्यात्मक अध्ययन ब्रिटिश और फ्रेंच मानव विज्ञानियों द्वारा किए गए थे। वे अक्सर औपनिवेशिक सरकारों द्वारा लोगों के बारे में जानकारी प्रदान करके प्रशासन की सहायता में संलग्न थे, ताकि उन्हें बेहतर ढंग से नियंत्रित और प्रबंधित किया जा सके। जैसा कि भारत में यह हुआ कि कई प्रशासकों ने लोगों पर शासन करने के उद्देश्य से जब क्षेत्रीयकार्य किया तो परिणाम स्वरूप वे खुद ही मानव विज्ञानी बन गए। परंतु इन प्रशासकों/नृवंशविदों के कार्य पूर्वाग्रह विहीन नहीं थे (चन्ना, 1992)। हालाँकि, मानव विज्ञानविदों को सामान्यतः आरंभ में राज्य द्वारा वेतन दिया जाता था और वे उपनिवेशवाद के राज्य एजेंडा का समर्थन करने के लिए आवश्यक था। लोगों के साथ लंबे समय तक रहने और उनके साथ घनिष्ठ संपर्क के परिणामस्वरूप उन्हें, उनके अध्ययन के लिए भेजा गया और कई बार वे राज्य की नीतियों के विरोधी भी बन गए। कभी–कभी उनके प्रभाव ने सरकार की नीतियों को बदल दिया। उदाहरण के लिए, मानव विज्ञानविद वेरिएर एल्विन का प्रभाव नेहरू सरकार द्वारा बनाई गई नीतियों में देखा गया जिसके आधार पर भारत के उत्तर–पूर्व के लोगों पर शासन किया जाना था। मानव विज्ञानी अक्सर स्थानीय रीति–रिवाजों को संरक्षित रखने की वकालत करते थे और वे स्थानीय मूल निवासियों के जीवन में अनुचित हस्तक्षेप के विरुद्ध थे। भारत और अफ्रीका में कार्य कर रहे ज्यादातर मानव विज्ञानी सरकारों के ही प्रतिनिधि थे जो 'बाहर' से काम करते थे। भारत और अफ्रीका के एक बड़े भू–भाग पर ब्रिटिश, फ्रेंच और डच सरकारों के बाह्य उपनिवेश थे, जहाँ पर उन देशों के मूल समाज और संस्कृतियां काफी हद तक बरकरार रहीं, इसी प्रकार की स्थिति इंडोनेशिया, बर्मा (म्यांमार) और अन्य उपनिवेशों में मौजूद थीं जहाँ की संस्कृति और समाज पर अंग्रेजों का आधिपत्य नहीं हो पाया।

अमेरिका में, स्थिति बहुत भिन्न थी। वहाँ के मूल अमेरिकी, बिखर से गए थे और उनके समाज नष्ट हो गए थे। अपितु मानव विज्ञानविदों ने जब उनका अध्ययन करना शुरू किया तब तक कई बची हुई जनजातियों और समुदायों को खत्म कर दिया गया। अमेरिकी मानव विज्ञान के जनक फ्रांज बोआस ने भी अपना मूल आधार जर्मन प्रसारवाद (German Diffusionism) से अर्जित किया। जिसने इतिहास, प्रवासन और सामाजिक परिवर्तन के बारे में एक विशेष दृष्टिकोण पर बल दिया। ब्रिटिश सामाजिक मानव विज्ञान के शास्त्रीय विकासवादी और कार्यात्मक आधार के विपरीत अमेरिका वालों को नरसंहार का सामना करना पड़ रहा था और समाजों के बड़े पैमाने पर प्रसार समकालिक, कार्यात्मक दृश्य का सामना नहीं कर सकते थेय संरचनात्मक– कार्यकर्ताओं द्वारा इसे कालातीत सद्भाव के रूप में देखा गया। समाज के विपरीत उन्होंने आवश्यकता अनुसार संस्कृति की अवधारणा पर बल दिया क्योंकि वे जो अध्ययन करने जा रहे थे वह समाजों पर केन्द्रित नहीं था, अपितु लोगों के जीवन के मिथकों, लोककथाओं, भौतिक संस्कृति और जीवन के तरीकों की कथाओं के बारे में था, जो कि या तो समाप्त हो गया था या जल्द ही समाप्त होने वाला था। उन्होंने जिन लोगों का अध्ययन किया, वे नवाहो की तरह छुपा सा जीवन बिता रहे थे। वे भी गरीबी, मानसिक और शारीरिक कष्टपूर्ण तथा कार्यशील समाज को कायम रखने के लिए जादूगरी नहीं करते थे अपितु अत्यधिक कठिन स्थितियों से बचने के लिए यह सब करते थे, जैसा कि इवांस–प्रिचर्ड द्वारा अजांदे पर किए गए अध्ययन में बताया गया है।

प्रतिबिंब

प्रसारवाद : प्रसारवाद वह सिद्धांत है जिसमें मूल केंद्र बिन्दु से संस्कृतियों के प्रसार पर बल दिया जाता है और समान लक्षण के समानांतर विकास पर बल नहीं दिया जाता है। अधिक समय बीतने के साथ यह विकास के विपरीत संस्कृतियों की गिरावट है और उद्‌गम स्थल से दूरी की ओर झुकाव है। उनका मानना है कि मूल अवधारणाएँ शायद ही कभी दिखती हैं, जबकि प्रसार के कारण समान सांस्कृतिक लक्षण होते हैं ।

बोआस के शिष्य और अमेरिकी मानव विज्ञान के सदस्य, क्रोबर ने संस्कृति संबंधी अपनी प्रसिद्ध परिभाषा को 'सुपर–ऑर्गनिक, सुप्रा–इंडिविजुयल' के रूप में दिया, दूसरे शब्दों में कुछ ऐसा जिसका अभी भी अध्ययन किया जा सकता है भले ही संस्कृति वाहक समाप्त हो गए हों। बोआस के अनुसार, ऐतिहासिक विशेषता विस्तृत सामान्यीकरण की कोई पद्धति नहीं थी अपितु संस्कृति को पर्यावरण के एक परिणाम के रूप में देखा गया, जो विशिष्ट पर्यावरणीय परिस्थितियों में मौजूद था और उन लोगों द्वारा संवाहित की जा रही थी जिनके पास विशेष मनोदशा थी, जो उनकी संस्कृति की प्रकृति के अनुकूल थी। दूसरे शब्दों में बोआस और उनके अनुयायियों ने स्वयं को संरचनात्मक–कार्यकर्ताओं की तरह सामाजिक अध्ययन तक सीमित नहीं रखा बल्कि संस्कृति की प्रकृति कि व्याख्या करने के लिए इतिहास, मनोविज्ञान और पर्यावरण की ओर भी ध्यान दिया। बोआस की किताब *द माइंड ऑफ द प्राइमेटिव मैन* संज्ञान में किया गया एक अध्ययन था और वह जर्मन संप्रदाय के गेस्टॉल्ट मनोविज्ञान से भी प्रभावित था। क्रोबर द्वारा विकसित रीति–रिवाज की अवधारणा जिसमें वे कुछ हिस्सों की बात न करके सबके योग की बात करते हैं, वह गेस्टॉल्ट संप्रदाय से प्रभावित थी। अमेरिकी संप्रदाय से उभरने वाले अन्य विद्वानों ने संस्कृति और व्यक्तित्व के बीच संबंध विकसित किया, जिससे सांस्कृतिक अंतर को समझाने के लिए मनोवैज्ञानिक अवधारणाएं सामने आईं, जैसा कि रूथ बेनेडिक्ट (1934) की रचना *द क्रिस्टेंथेमम एंड सोर्ड* संस्कृति के पैटर्न पर आधारित थी, जिसमें उन्होने सांस्कृतिक रीति–रिवाजों की अवधारणा का इस्तेमाल किया है। बोआस ने मनोविज्ञान से संबंधित अपनी अभिरूचि को अपने शिष्यों मार्गरेट मीड, लिंटन और कुछ अन्य शिष्यों तक प्रसारित किया। जिन्होंने बाद में मनोवैज्ञानिक मानव विज्ञान की शाखा की नींव रखी, जिसका विकास संस्कृति–व्यक्तित्व संप्रदाय से हुआ। व्यक्तित्व के शुरुआती गठन संबंधी फ्रायडियन सिद्धान्त को मानव विज्ञानविदों द्वारा पुनःनिर्मित किया गया, जिन्होंने इस बात को इंगित किया कि बालक के पालन–पोषण के प्रारंभिक अनुभव सांस्कृतिक रूप से विशिष्ट तरीकों से जुड़ा होता है इसलिए संस्कृति, व्यक्तित्व गठन का एक प्रमुख कारक होता है। इस सिद्धान्त का एक नवांकुर राष्ट्रीय संस्कृति की अवधारणा थी जो बहुत लोकप्रिय हुई।

अमेरिकी संप्रदाय न केवल मनोवैज्ञानिक क्षेत्रों में फैला अपितु, यह अपने ऐतिहासिक विशिष्टता के मूल स्थल से निकलकर पारिस्थितिकीय मानव विज्ञान, आर्थिक मानव विज्ञान, चिकित्सा मानव विज्ञान और ऐतिहासिक मानव विज्ञान के रूप में फैल गया। पचास के दशक के बाद हालांकि, दो परंपराओं का अलग होना लगभग विलुप्त हो गया क्योंकि संरचनात्मक–कार्यात्मकता और ऐतिहासिक विशिष्टता का स्थान अत्यधिक समकालीन सिद्धांतों ने ले लिया।

प्रतिबिंब

सिग्मंड फ्रायड : सिग्मंड फ्रायड, मनोविश्लेषणात्मक संप्रदाय के संस्थापक थे और उन्हें मानव व्यक्तित्व विकास के उनके सिद्धांतों के लिए जाना जाता है। जिसकी पहचान के लिए उन्होने इसे प्रारंभिक बाल्यावस्था अनुभवों के आधार पर देखा था। उन्होंने ऑडीपल कॉम्प्लेक्स की भांति बचपन के अनसुलझे अंतर्विरोधों के संदर्भ में न्यूरोसिस का वर्णन किया।

अपनी प्रगति की जाँच करें 4

8. अध्ययन की कौन सी विधि मानव विज्ञान की कसौटी है?

....

....

....

....

9. ''अग्रोनौट्स ऑफ द वेस्टर्न पेसिफिक'' नामक किताब किसने लिखी है?

....

....

....

10. अमेरिकी मानव विज्ञान का जनक किसे माना जाता है?

....

....

....

11. नवाहो लोगों का अध्ययन करते समय अमेरिकी मानवविज्ञानियों ने समाज के स्थान पर संस्कृति की अवधारणा पर क्यों बल दिया?

....

....

....

....

12. अमेरिकी के कुछ प्रारंभिक मानव विज्ञानविदों के नाम बताएं और उनके मतों पर प्रकाश डालिए?

....

....

....

2.5 भारत में मानव विज्ञान का विकास

जब मानव विज्ञान विकसित हो रहा था तब भारत एक ब्रिटिश उपनिवेश था। आरंभ में जो कार्य किए गए उन्हें मानव विज्ञान के रूप में माना जा सकता है, उदाहरणार्थ हट्टन जैसे ब्रिटिश प्रशासकों द्वारा किया गया। लेकिन इनमें उनके नस्लीय पूर्वाग्रह और यूरोसेन्ट्रिज्म की भावना मौजूद थी (चन्ना 1992), हालांकि वास्तव में वे लोग शैक्षिक रूप से उन्मुख थे और अत्यधिक शिक्षित थे। उन्हें लोगों और अन्य संस्कृतियों के बारे में अत्यधिक जिज्ञासा थी जिन पर वे शासन करना चाहते थे। अपने शासकों द्वारा दिए गए नेतृत्व के बाद ये विद्वान, जिन्हें हम अब भारत में मानव विज्ञान संबंधी विचारधारा के जनक के रूप में देखते हैं, उनमें एस.सी रॉय और अनंतकृष्ण अय्यर जैसे विद्वानों के नाम शामिल हैं, जो कि विकास के यूरोपीय सिद्धान्त के साथ–साथ सार्वभौमिक मानवता से भी प्रभावित थे। उनका यह प्रभाव रॉय के लेखन में प्रतिबिंबित होता है, जिसमें उन्होंने मध्य भारतीय जनजातियों के बारे में लिखा है। उन्होंने ब्रिटिश प्रशासन के साथ मिलकर काम किया। कुछ वृहद एथ्नोलॉजी की रचनाएँ की जिसमें सामाजिक–सांस्कृतिक मानव विज्ञान और जैविक मानव विज्ञान को शामिल किया। मुंडा और उरांव संबंधी एस.सी.रॉय की रचना और कोचिन की जनजातियों पर अय्यर की रचना की भांति, इन रचनाओं में जीवन के सभी पहलू समाहित हैं, जैसे कि इतिहास, प्रवासन, आवास, लोगों की वास्तविक रूप–रेखा, उनकी संस्कृति, भाषा और सामाजिक संस्थान।

कलकत्ता विश्वविद्यालय, पहला विश्वविद्यालय था जहां 1921 में मानव विज्ञान विभाग कि स्थापना हुई और उस विभाग में बी एस गुहा, अनंतकृष्ण अय्यर, पंचानन मित्रा, एन. के. बोस जैसे कुछ अन्य संकाय सदस्य थे। यद्यपि, 1919 में बंबई विश्वविद्यालय में सामाजिक मानव विज्ञान को समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के भाग के रूप में पहली बार प्रस्तुत किया गया। प्रारंभ में मानव विज्ञान को एक एकीकृत विषय के रूप में पढ़ाया जाता था। जिसमें शारीरिक और सामाजिक पहलुओं को शामिल किया गया था। यह मानव विज्ञान की अपेक्षा एथेनोलॉजी अधिक था, जिसे एस सी रॉय के साथ साथ एन. के. बोस जैसे विद्वानों के प्रबंध लेखन कार्यों में देखा जा सकता है। इन्होंने समाज के सभी पहलुओं को अपने विवरण में शामिल किया।

उस समय प्रारंभिक कार्य जनजातियों या आदिमजातियों से संबंधित आंकड़ों का संग्रहण ही था, क्योंकि विकासवादी अवधारणा के अंतर्गत जीवन जीने की यह शैली समाप्त होने वाली थी, जिसे मानव विज्ञान के रूप में जाना जाता था। संकलन का यह कार्य जिसे एच. एच. रिस्ले द्वारा शुरू किया गया था। जिसने 1931 में जनगणना के बाद भारत के एक एथनोग्राफिक सर्वेक्षण की शुरुआत की थी। चूंकि, भारत के सभी भाग उस समय ब्रिटिश शासन के अधीनस्थ नहीं थे इसलिए इस सर्वेक्षण में सहयोग करने के लिए स्वतंत्र राज्यों से अनुरोध किया गया था। कोचीन दरबार वह इकाई थी जिसने 1902-1924 तक कोचीन राज्य के एथनोग्राफी के अधीक्षक के रूप में एल. के. अनंतकृष्ण अय्यर को नियुक्त किया, जिसके परिणामस्वरूप कोचीन जनजाति और जातियों पर दो खंड सामने आए जिनका प्रकाशन 1908-1912 के बीच हुआ। अय्यर ने 1920 तक अपने अध्ययन को जारी रखा और 1921 में कलकत्ता विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए जहां से वह 1932 में सेवानिवृत्त हुए।

यह जानना दिलचस्प है कि एक स्थानीय मानव विज्ञानी के रूप में उन्होंने अपने यूरोपीय समकक्षों के बीच बड़ी रुचि पैदा की जोकि उनके द्वारा भारत के 'आदिम' लोगों पर दिये गए व्याख्यान को सुनने के लिए उत्सुक थे। उन्होंने यूरोप में बहुत सारी यात्राएं कीं और व्याख्यान

दिए और 1934 में लंदन में आयोजित मानव विज्ञान और एथ्नोलॉजिकल विज्ञान के प्रथम अधिवेशन में भाग लिया, जहां उन्हें अधिक मान–सम्मान मिला।

जब मानव विज्ञान ने खुद को एक क्षेत्र (फील्ड) विज्ञान के रूप में स्थापित किया और एकल समुदाय के समग्र और कार्यात्मक अध्ययन के आधार पर व्यक्तिगत मानव विज्ञानविदों के लेखन की शुरुआत की गई तो, पश्चिमी देशों के कई मानव विज्ञानी भारत आए और यहाँ कई अनुसंधान कार्य किए। उनमें से प्रमुख हैं, ग्रेट ब्रिटेन में मानव विज्ञान के जनक ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन, जिन्होंने ***द अंडमान आइलैंडर्स*** नामक क्लासिक मोनोग्राफ लिखा, जिसका प्रकाशन 1922 में कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा किया गया। उनसे पहले डब्ल्यू. एच. आर. रिवर्स, जो विकासवाद और प्रकार्यात्मकता की सीमा से परे थे, उन्होंने ***द टोडा*** पर 1911 में अपनी मूल रचना लिखी और वह भी उसी साल जब सिलिग्मंस ने भी **द वेदास ऑफ सीलोन** नामक अपनी एथ्नोलोजी से संबंधित अपनी किताब प्रकाशित की ।

एस. सी. रॉय मध्य भारतीय जनजातियों जैसे, मुंडा और ऊरांव पर लिखे अपने संकलन के लिए जाने जाते हैं। उनका काम शुरुआती एथनोग्राफर्स के समान है। इस विधा के एक दूसरे विद्वान थे इरवती कर्वे, जिन्होंने सामान्य तुलनात्मक एथ्नोलोजी पर कार्य किया। कर्वे ने भारत में विभिन्न परिवार प्रणालियों से संबंधित क्षेत्रवार संकलन किया, जिसमें प्राचीन भारतीय परिवारों का मूल्यांकन किया गया, जिसे उन्होंने भारतीय पौराणिक कथाओं के अध्ययन से पुनर्प्राप्त किया था। हालांकि, उनका मौलिक योगदान यह दर्शाने में था कि भारत में जाति और नस्ल एक दूसरे से जुड़े हुए नहीं हैं, और यह एक ऐसी परिकल्पना थी जिसे एच. एच. रिस्ले द्वारा विकसित किया गया था और जी एस घुर्ये जैसे विद्वानों द्वारा समर्थित किया गया था।

इन सामान्य एथ्नोग्राफियों के आधार पर पी. ओ. बोडिंग ने अधिक विशिष्ट और केंद्रित रचनाएँ लिखीं, जिनकी *संथाल मेडिसिन* (1925-1940) नामक रचना को अब चिकित्सा मानव विज्ञान के क्षेत्र में क्लासिक का दर्जा प्राप्त है। बोडिंग, जो एक नार्वेजियन विद्वान हैं। उन्हें भी उनके संथाल व्याकरण (1922), संथाल लोकगीत और संथाल पहेलियों एवं जादू संबंधी अन्य कार्यों के संकलन के लिए जाना जाता है।

ए. आर. रैडक्लिफ–ब्राउन के एक शिष्य एम. एन. श्रीनिवास न केवल अपने उत्कृष्ट एथनोलॉजी के लिए प्रसिद्ध हैं बल्कि, एक स्वदेशी परिप्रेक्ष्य से जाति संबंधी महत्वपूर्ण अंतर्दृष्टि विकसित करने के लिए भी प्रसिद्ध हैं। जाति और वर्ण संबंधी अवधारणाओं का उनके द्वारा इस्तेमाल किया जाना और इस तरह से संस्कृतिकरण की अवधारणा और प्रमुख जाति की अवधारणा के बारे में बताना उनके आंतरिक परिपेक्ष्य को दर्शाता है, जोकि बहुत समृद्ध हो सकता है।

भारतीय और पश्चिमी मूल के कई विद्वानों ने 1930 के बाद से भारत में कार्य किया और विश्लेषणात्मक अवधारणाओं को विकसित करने और उन्मुख मानव विज्ञान विकसित करने के लिए क्षेत्रीय अध्ययन विधियों का उपयोग किया। 1938 के बाद से बड़ी संख्या में अमेरिकी मानव विज्ञानियों ने भारत का दौरा किया और यहाँ काम किया। जिसमें मैककिम मैरियट, ऑस्कर लेविस, मॉरीस ओप्लर, स्टेनली और रूथ फ्रीड, रॉबर्ट रेडफील्ड, कैथलीन गॉफ, जॉन. पी. मेनचर, पॉलिन कोलेन्डा और अन्य लोग शामिल थे, जिन्होंने स्थानीय विद्वानों के साथ घनिष्ठ सहयोग में काम किया और जाति, 'जजमानी', अस्पृश्यता, गांव के अध्ययन और जनजातियों के अध्ययन जैसे, भारतीय मुद्दों पर अपना ध्यान केंद्रित किया। इस अवधि में कई विश्लेषणात्मक नियम और श्रेणियां विकसित हुईं जैसे कि, सार्वभौमिकरण और स्थानीयकरण, लघु परंपरा और महान परंपरा, जनजातीयता, हिंदूकरण आदि। सैद्धांतिक विवाद का एक पहलू

जनजातियों को श्रेणी माना जाना था जोकि भारतीय संदर्भ में था, जिसमें जनजाति–जाति निरंतरता की अवधारणा को एन. के. बोस और अन्य कई विद्वानों द्वारा शुरू किया गया था। (नाथन 1997)

वेरिएर एल्विन और क्रिस्टोफ वॉन फ्यूरर–हैमिन्डार्फ जैसे कुछ पश्चिमी मानव विज्ञानविदों ने व्यावहारिक रूप से स्थानीय होने के लिए अपने मूल देशों को छोड़ दिया। अंग्रेज के रूप में जन्मे और पेशे से ईसाई मिशनरी के सदस्य एल्विन ने अपने दोनों रूपों को त्याग दिया और भारतीय नागरिक बन गए और हिंदू पहचान को स्वीकार कर लिया, जो कि यद्यपि एक रूढ़िवादी उच्च जाति नहीं थी। गांधी के एक महान प्रशंसक और अनुयायी एल्विन, खुशी से जनजातियों के स्वतंत्र और आसान जीवन के साथ मिल गए। जिसमें उन्होंने शादी की और उनके बच्चों का जन्म हुआ। उन्होंने अपने दर्शन का प्रस्ताव अरुणाचल प्रदेश के रूप में किया। जिसे उन्होंने लोगों की स्वतंत्रता के रूप में देखा ताकि, किसी बाहरी दबाव के बिना लोग अपने जीवन जीने के तरीके का चयन कर सकें। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के साथ उनके करीबी रिश्ते ने पंचशील की नीति और जनजातियों के प्रति सहिष्णु दृष्टिकोण ने उन लोगों को अपने जीवन को अपने तरीके से जीने के लिए प्रेरित किया।

प्रतिबिंब

जजमानी : जजमानी, जाति आधारित भारतीय गांवों में पायी जाने वाली कृषि आधारित एक पुनर्वितरण प्रणाली है। लैंडहोल्डिंग अर्थात भू–स्वामी जातियां विशेषज्ञ, जाति समूहों को उपज का हिस्सा देती हैं जो उन्हें बाल काटने, कपड़े धोने और कृषि श्रम जैसी सेवाएं प्रदान करती हैं। भारत के कई हिस्सों में ब्राह्मण भी एक आश्रित जाति है जो भोजन और अन्य निर्वाह के बदले में अनुष्ठान सेवाएं प्रदान करता है।

सार्वभौमिकरण और स्थानीयकरण : सार्वभौमिकरण सांस्कृतिक संचरण की प्रक्रिया है जहां एक सरल समाज से एक विशेषता सार्वभौमिक संस्कृति में विलीन हो जाती है और स्थानीयकरण एक विपरीत प्रवशत्ति है जहां एक जटिल सभ्यता से एक विशेषता को एक संशोधित रूप में स्थानीय संस्कृति में स्वीकार किया जाता है।

छोटी परंपरा और महान परंपरा : ये शब्द रॉबर्ट रेडफील्ड द्वारा बनाए गए थे और क्रमशः सरल समाज और जटिल समाज की संस्कृतियों का उल्लेख करते थे।

जनजातीयता : जनजातीय समाज से जाति समाज में सांस्कृतिक लक्षणों की स्वीकृति पाना ताकि वे जनजाति के समान सांस्कृतिक गुण विकसित कर सकें। इसका अर्थ यह भी हो सकता है कि, कुछ जाति आधारित लक्षणों को छोड़कर और जनजातियों में मिले अनुष्ठानों और भोजन को स्वीकार करना।

हिंदूकरण : यह ज्यादातर ब्राह्मणवादी मूल्यों और जाति व्यवस्था की स्वीकृति को संदर्भित करता है

भारतीय विद्वान, अमेरिकी संप्रदाय द्वारा इस विश्लेषणात्मक चरण में समान रूप से प्रभावित थे क्योंकि उन्हें पहले मुख्य रूप से ब्रिटिश संप्रदाय और महाद्वीप में उजागर किया गया था। प्रारंभिक भारतीय विद्वानों में से कुछ लोगों जिन्होंने भारतीय समाज के अध्ययन में महत्वपूर्ण योगदान दिया उनमें एस.सी. दुबे, लीला दुबे, ए.अय्यप्पन, एल.पी विद्यार्थी और अन्य शामिल हैं। पचास के दशक से मानव विज्ञान को एक अलग विषय के रूप में पढ़ाया जाता था और इससे

पहले प्रयोग किए जाने वाले संयुक्त नृवंशविज्ञान (इथेनोग्राफी) के दृष्टिकोण को अच्छी प्रकार से विकसित पाठ्यक्रम द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। जिसमें सामाजिक मानव विज्ञान, शारीरिक मानव विज्ञान और पुरातत्व के गहन अध्ययन शामिल थे।

अस्सी के बाद से हाल के दिनों में भारतीय मानवविज्ञान एक बहुत ही महत्वपूर्ण और औपनिवेशिक शाखा के रूप मे विकसित हो गया है। कार्य अब विशिष्ट मुद्दों पर केंद्रित हैं, जैसे कि पारिस्थितिकी, लिंग, जाति का शोषण और जटिल और परिवर्तनशील संसार में पहचान के प्रश्न। बी.के. रॉय बर्मन, वर्जिनियस खाखा, फेलिक्स पडेल, बी.डी शर्मा जैसे अधिक समकालीन विद्वानों ने भारत में जनजातियों के शोषण और पहचान, संसाधनों के नुकसान के मामले में उन की स्थिति पर गंभीर रूप से ध्यान दिया है।

एस. सी. दुबे और एन. के. बोस जैसे भारतीय मानव विज्ञान के कुछ अधिकारियों ने उन अवस्थाओं से संबन्धित अपना वर्गीकरण दिया है, जिसके माध्यम से भारतीय मानव विज्ञान विकसित हुआ है। वे जनजातियों के विश्वकोश और डेटा बेस के संकलन और निर्माण के पहले चरण की पहचान करते हैं, दूसरा चरण, अनुभवजन्य क्षेत्र और जनजातियों पर गुणात्मक रूप से निर्मित मोनोग्राफ का निर्माण और तीसरा, उन पर किए गए विश्लेषणात्मक कार्य। डी. एन मजूमदार के अनुसार पहले चरण को फॉर्मूलेशन चरण (1774–1911) कहा जा सकता है जबकि दूसरे चरण को 1912–1937 को रचनात्मक चरण कहा जा सकता है। 1938 से शुरू होने वाला समय महत्वपूर्ण चरण कहा जा सकता है। हालांकि, नब्बे के दशक से सैद्धांतिक परिवर्तनों ने जनजाति की अवधारणा पर पुनर्विचार करने के लिए काफी बदलाव किए हैं। गैर–उपनिवेशीकरण (डीकोलोनाईजेशन) के सैद्धांतिक बदलावों के बाद, पहले से स्वीकृत शब्दावली और 'आदिम', 'जनजाति', 'जंगली' आदि जैसे उपनामों में सुधार किए जा रहे हैं और काफी पुनर्विचार किया जा रहा है। (चन्ना, 2015)

अब यह महसूस किया गया है कि अधिकांश वर्गीकरण और लेबलिंग वास्तविकता के प्रति सम्मान में नहीं बल्कि सत्ता धारकों की प्रशासनिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया गया था।(खाखा, 2008ए राईक्रॉफ्ट और दासगुप्त, 2011) एक महत्वपूर्ण विकास, स्थानीय विद्वानों का लेखन रहा है, जो अध्ययन की वस्तुएं थीं, जो कि अब खुद के बारे में बात करने का जरिया और आवाज है। (हम्त्सो–निएनू, पिमोमो और तुनी 2012 कामेई 2004)

समकालीन भारतीय मानव विज्ञान भी हाशिए के लोगों को स्वर देने और आदिवासी समाज के वास्तविक स्वरूप को आगे लाने की वकालत कर रहा है, और उसके पहलुओं में यह बात शामिल है कि वे 'आदिम' कम विकसित नहीं हैं, अपितु सदियों से अच्छी प्रकार से अनुकूलित अर्थव्यवस्थाएं हैं जिनमें विशेष रूप से एक स्थायी भविष्य के लिए महान मूल्य और ज्ञान प्रणालियों के भंडार हैं।

अपनी प्रगति की जाँच करें 5

13. उस भारतीय विश्वविद्यालय का नाम बताएं जहां 1921 में मानव विज्ञान का पहला विभाग स्थापित किया गया ।

    ....

    ....

    ....

14. 1919 में भारत में सामाजिक मानव विज्ञान को पहली बार किस विश्वविद्यालय में समाजशास्त्र पाठ्यक्रम के एक भाग के रूप में प्रस्तुत किया गया।

....

....

....

15. ग्रेट ब्रिटेन में मानव विज्ञान का जनक किसे माना जाता है? उनके क्लासिक मोनोग्राफ का नाम बताएं।

....

....

....

16. *द टोडास* की रचना किसने की है?

....

....

....

2.6 सारांश

इस इकाई में विद्यार्थियों हेतु मानव विज्ञान की शाखाओं के बारे में व्यापक प्रकाश डाला गया है, इसकी नींव यूरोप के इतिहास तक जाती है और इसकी प्रासंगिकता का भी वर्णन किया गया है साथ ही प्रारम्भिक वर्षों में इसके विस्तार के बारे में भी बताया गया है। इसकी स्थापना का कारण था उपनिवेशवाद, क्योंकि पहले ब्रिटिश और अन्य यूरोपीय और बाद में अमेरिकी प्रशासकों को उन लोगों के बारे में जानने की जरुरत थी जिन पर वे शासन कर रहे थे। यद्यपि शुरुआत में ब्रिटिश, फ्रेंच और अमेरिकी संप्रदायों के रूप में विकसित मानव विज्ञान आज हमारे समक्ष एक अधिक एकीकृत वैश्विक परिप्रेक्ष्य है।

मानव विज्ञानविदों द्वारा उनके क्षेत्रीयकार्य विधियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को अपरिचित लोगों को समझने और शासन करने की संपत्ति के रूप में देखा गया था। इस प्रक्रिया में उपनिवेशवादियों ने विकासवादी स्कीम के आधार पर उपनिवेशीकरण को उचित ठहराया अपितु बाद में क्षेत्र आधारित मानव विज्ञानियों ने इसकी गंभीर रूप से आलोचना की। जिसमें इन्होंने यह पाया कि अधिकांश सांस्कृतिक लक्षणों को अपने संदर्भ में प्रासंगिकता प्रकट की गई है, इसे उच्च या निम्न के रूप में वर्गीकृत नहीं किया जा सकता है। बाद में सांस्कृतिक सापेक्षता के रूप में पहचान वाले इस परिप्रेक्ष्य ने मानव विज्ञानी संसार के स्थानीय लोगों के अधिकारों की वकालत की। यद्यपि भारत में भी मानव विज्ञान एक औपनिवेशिक विषय के रूप में शुरू हुआ। परंतु जल्द ही यह एक महत्वपूर्ण शाखा के रूप में विकसित हुआ जिसमें आदिवासी और गैर–शहरी लोगों के जीवन के तरीकों की रक्षा करने की कोशिश की जा रही थी। जनजातीय लोगों को जीवन को अपने तरीके से जीने के लिए मानवविज्ञानी और उनके हस्तक्षेप के माध्यम से भारतीय राज्य द्वारा कई कानूनों और नीतियों को अपनाया गया था। चूंकि, जीवन के ये परंपरागत तरीके नव उदारवाद और वैश्विक पूंजीवाद के दबाव से खतरे में आ सकते हैं,यही

कारण है की मानव विज्ञानी, सीमांत समुदायों और उनके जीवन के तरीकों की रक्षा कर रहे हैं। इस प्रक्रिया में उन्होंने परंपरागत आर्थिक सिद्धांतों और विकास की अवधारणाओं की आलोचना भी विकसित की है, जो केवल आर्थिक विकास को ही उन्नति का मानदंड मानती थी। इस प्रकार मानव विज्ञान आज एक बहुत ही प्रासंगिक विषय है जो विशेष रूप से प्रशासकों और नीति निर्माताओं के अध्ययन के लिए यह जरुरी है। अगली इकाई में हम यह जानेंगे की कैसे सामाजिक–सांस्कृतिक मानवविज्ञान अन्य विषय अनुशासनों जैसे इतिहास,समाजशास्त्र, मनोविज्ञान के साथ कैसे संबंधित है।

2.7 संदर्भ

अरोन, रेमंड. (1965) *मेन करैंट्स इन सोशियोलॉजिकल थॉट* (खंड 2), हार्मंडवर्थः ट्रांसेक्शन प्रकाशक.

बील्स, एलन और मैककिम मैरियट (संपा.) 1955, *विलेज इंडिया : स्टडीज इन द लिटिल कम्युनिटी*, शिकागोः शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस.

बोडिंग, पी.ओ. 1986 (1925–40) *स्टडीज इन सैंटल मेडिसिन एंड कनेक्टेड फोकलोर*, कलकत्ताः द एशियाटिक सोसाइटी.

बोस, निर्मल कुमार 1992 (1975) *द स्ट्रक्चर ऑफ हिंदू सोसाइटी* , हैदराबादः ओरिएंट लॉन्गमैन.

चन्ना, सुभद्रा मित्रा. (2015). *स्टेट कण्ट्रोल, पोलिटिकल मेनिपुलेसंस, एंड द क्रिएशन ऑफ आईडेंटिटीजः ' द नार्थ–ईस्ट ऑफ इंडिया* एनएमएमएल ओकेसनल पेपरः हिस्ट्री एंड सोसाइटी , न्यू सीरीज 72, नई दिल्लीरू नेहरू मेमोरियल संग्रहालय और पुस्तकालय.

नाथन, देव. (संपा.) (1997). *फ्रॉम ट्राइब टू कास्ट* शिमला : भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान.

एल्विन, वेरियर. (1944). *द अबोरिजिंल्स बॉम्बेः* ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

एल्विन, वेरियर. (1959). (संशोधित संस्करण) *ए फिलोसोफी फॉर एनईएफए*, शिलांगः उत्तर–पूर्व फ्रंटियर एजेंसी.

इवांस–प्रिचर्ड, ईई (1981). *ए हिस्ट्री ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी थॉटः* लंदनः बेसिक बुक्स

घूर्रे, जी.एस 1959. (1943) *द शेडयूल ट्राइब्स ऑफ इंडिया.* बॉम्बेः पोपुलर प्रकाशन.

हम्त्सो–निएनयू, ईइंगबेनी, पॉल पिमोमो और वेनुसा तुनी. 2012. *नागासः एसेज ऑफ रेस्पोंसीबल चेंज,* नागालैंडः हेरिटेज पब्लिशिंग हाउस.

इंगोल्ड, टिम. (1986). *एवोलुशन एंड सोशल लाइफ.* कैम्ब्रिजः कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस.

कामेई, गंगमुमेई. (2004). *हिस्ट्री ऑफ द जेलियनगोंग नागाः फ्रॉम माखेल टू रानी गैडिनिल.* गुवाहाटीः स्पेक्ट्रम प्रकाशन.

लीफ, मुर्रे जे. (1979). *मैन, माइंड एंड साइंसः ए हिस्ट्री ऑफ एन्थ्रोपोलॉजी.* न्यूयार्क, कोलंबिया विश्वविद्यालय प्रेस.

ऑर्टनर, शेरी. (1974). *इज फीमेल टू मेल एज नेचर इज टू कल्चर?* वीमेन, कल्चर एंड सोसाइटी, संपा मिशेल जेड रोसाल्डो और लुईस लैंपेयर, 68–87, स्टैनफोर्ड, सीएः स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

रॉय, शरत चंद्र. (1912). *द मुंडा एंड देएर कंट्री.* कलकत्ताः कुंटालीन प्रेस.

रॉय–बर्मन, बीके (1994). *इंडिजेनस एंड ट्राइबल पीपल्सः मिस्ट एंड न्यू होरिजंस,* नई दिल्लीः मित्तल प्रकाशन.

रायक्रॉफ्ट, डैनियल जे और संगीता दासगुप्त. (संपा.) 2011. द पॉलिटिक्स ऑफ बेलोंगिंग इन इंडिया : बेकमिंग आदिवासी. यूके रूटलेज.

शर्मा, बी.डी. (2001). *ट्राइबल अफेयर्स इन इंडिया : द क्रूशियल ट्रांजीशन,* नई दिल्लीः सहयोग पुस्तक कुटीर.

श्रीनिवास, एमएन (1966). *सोशल चेंज इन मॉडर्न इंडिया,* बॉम्बेः सहयोगी प्रकाशक.

ट्रुटमैन, थॉमस. (1992). (पुनर्मुद्रण) *आर्यन्स एंड द ब्रिटिश इन इंडिया.* नई दिल्ली : योदा प्रेस

उलिन, रॉबर्ट सी (2001). *अंडरस्टैंडिंग कल्चर : पर्सपेक्टिव्स इन एंथ्रोपोलॉजी एंड सोशल थ्योरीः* यूएसएः ब्लैकवेल.

विद्यार्थी, एल.पी. (1963). *मालेरः एक स्टडी इन नेचर–मेन–स्पिरिट काम्प्लेक्स ऑफ ए हिल ट्राइबः* कलकत्ताः बुकलैंड प्रा. लिमिटेड.

ससा, वर्जिनियस. (2008). *स्टेट, सोसाइटी एंड ट्राइब्सः इश्यूज इन पोस्ट– कोलोनियल इंडिया.*नई दिल्लीः पियर्सन–लांगमैन.

2.8 आपकी प्रगति की जाँच करने के लिए उत्तर

1. ऑगस्टे कॉम्टे, हर्बर्ट स्पेंसर, वालेस और चार्ल्स डार्विन कुछ प्रारंभिक विचारक थे जिन्होंने मनुष्यों और समाजों के विकास के बारे में वर्णन किया।
2. हर्बर्ट स्पेंसर
3. देखें अनुभाग 2.1
4. सत्य
5. देखें अनुभाग 2.2
6. एडवर्ड बी. टायलर
7. (ए) भौतिक या जैविक मानव विज्ञान (बी) सामाजिक/सांस्कृतिक मानव विज्ञानय (सी) पुरातात्विक मानव विज्ञान (डी) भाषाई मानव विज्ञान ।
8. क्षेत्रीयकार्य (फील्डवर्क)
9. ब्रोनीस्लो मालिनोवस्की
10. फ्रांज बोआस

11. देखें अनुभाग 2.4

12. फ्रांज बोआस, ए. एल. क्रोबर,मार्गेट मीड,ई.ई.इवंस प्रिचर्ड, रुथ बेनेडिक्ट

13. कलकत्ता विश्वविद्यालय

14. बॉम्बे विश्वविद्यालय

15. ए. आर. रैडक्लिफ–ब्राउन को ग्रेट ब्रिटेन में मानव विज्ञान के जनक के रूप में माना जाता है? अंडमान द्वीपसमूह उनका क्लासिक मोनोग्राफ है।

16. डब्ल्यू. एच. आर. रिवर्स ने द टोडाज नामक पुस्तक लिखी है।

इकाई 3 अन्य शाखाओं एवं विभिन्न अनुशासनों के साथ सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान का संबंध

इकाई की रूपरेखा

3.0 प्रस्तावना

3.1 समाजशास्त्र के साथ संबंध

3.2 मनोविज्ञान के साथ संबंध

3.3 इतिहास के साथ संबंध

3.4 अर्थशास्त्र के साथ संबंध

3.5 राजनीति विज्ञान के साथ संबंध

3.6 प्रबंधन विज्ञान के साथ संबंध

3.7 जैव विज्ञान के साथ संबंध

3.8 भाषाविज्ञान के साथ संबंध

3.9 जनसांख्यिकी के साथ संबंध

3.10 दर्शनशास्त्र के साथ संबंध

3.11 सांस्कृतिक अध्ययन के साथ संबंध

3.12 सारांश

3.13 संदर्भ

3.14 आपकी प्रगति की जांच करने हेतु उत्तर

अधिगम का उदेश्य

इस इकाई को पढ़ने के उपरांत शिक्षार्थी निम्न बातों को समझने में सक्षम होंगे:

- मानव विज्ञान किस प्रकार सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों से जुड़ा हुआ है
- मानव विज्ञान संबंधित ज्ञान सामाजिक विज्ञान के अन्य विषयों को समझने में किस प्रकार उपयोगी है; तथा
- मानव विज्ञान के क्षेत्र में कौन से बड़े परिवर्तन हुए हैं ।

योगकर्ता : डॉ. केया पांडे, मानव विज्ञान विभाग,लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ, प्रोफेसर विनय कुमार श्रीवास्तव द्वारा संपादित पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, मानव विज्ञान विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय.वर्तमान निर्देशक, भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3.0 प्रस्तावना

मानवता का वैज्ञानिक अध्ययन ही मानव विज्ञान का अर्थ एवं उद्देश्य है। मानव विज्ञान में इस बात का अध्ययन किया जाता है कि मनुष्य कौन है, वे किस प्रकार विकसित हुए, वे कैसे दिखते हैं, वे किस प्रकार से बातचीत करते हैं, वे एक विशिष्ट तरीके से क्यों कार्य करते हैं। वृहत तौर पर देखा जाए तो पूरी दुनिया की मानव जाति में शक्ल– सूरत, भाषा एवं व्यवहार में कुछ समानताएं एवं भिन्नता देखने को मिलती है। मनुष्य भी कई अन्य विषयों के लिए अध्ययन का उद्देश्य रहा है। जैव विज्ञान, आविर्भाव, सामाजिक विज्ञान आदि सभी विषय मनुष्य एवं उसके एवं कार्यों से जुड़े हुए हैं।

मानव विज्ञान की कोई निश्चित सीमा नहीं है। इसका अध्ययन किसी भी समूह तक सीमित नहीं है अपितु सम्पूर्ण मानव जाति इसके अध्ययन का विस्तार है। आधुनिक सभ्यताओं, समकालीन उदित राष्ट्रों, औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया, शहरीकरण एवं इस प्रकार के अन्य क्षेत्रों में भी मानवविज्ञानी पूरी तरह से संलग्न हैं। सूक्ष्म तौर पर मानव विज्ञान इस बात पर प्रकाश डालता है कि प्रत्येक समूह के लोगों में अद्वितीय क्या है तथा वृहत तौर पर मानव विज्ञान में प्रत्येक संस्कृति का अन्य संस्कृतियों के साथ संबंध की विशेषताओं पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। पिछली इकाई में हमनें सामाजिक एवं सांस्कृतिक मानव विज्ञान के वृद्धि और विकास पर विमर्श किया। इस इकाई में हम मानव विज्ञान का अन्य सामाजिक विज्ञानों के साथ उसके संबंधों को समझने का प्रयास करेगें।

3.1 समाजशास्त्र के साथ संबंध

सामाजिक–मानव विज्ञान के सबसे समीप जो सामाजिक विज्ञान है उसे समाजशास्त्र कहते हैं। तथापि उनके बीच के संबंधों के बारे में काफी सशक्त एवं भिन्न भिन्न विचार हैं। समाज के अध्ययन हेतु प्रत्येक का दावा न सिर्फ अर्थशास्त्र एवं राजनीति जैसे किसी एक पहलू से संबंधित है अपितु सभी विषयों के साथ जुड़ा हुआ है। समाजशास्त्र सामाजिक मानव विज्ञान से बहुत प्राचीन है, जिसकी शुरुआत फ्रांस में ऑगस्टे कॉम्टे एवं इंग्लैंड में हरबर्ट स्पेंसर से शुरू हुई। मानव विज्ञान के क्षेत्र में ब्रिटिश परंपरा के संस्थापक के रूप में दो लोग प्रसिद्ध हैं जिनमें मालिनोव्स्की और ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन शामिल हैं। इन्होनें उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में फ्रांसीसी समाजशास्त्रियों के विचारों को ग्रहण किया तथा ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन ने रॉयल एंथ्रोपोलॉजिकल इंस्टीट्यूट में अपने अध्यक्षीय भाषण में यह कहा कि "यदि कोई यह चाहता है कि इसे तुलनात्मक समाजशास्त्र कहा जाए तो वे इससे सहमत हैं"। बहुत से नए ब्रिटिश विश्वविद्यालयों में समाजशास्त्र एवं मानव विज्ञान विभाग संयुक्त रूप से शामिल किए गये। हालांकि विश्वविद्यालय दोनों विषयों में अलग-अलग उपाधियाँ प्रदान करते हैं जिसके पीछे कुछ कारण हो सकते हैं। एक सामान्य बात यह है कि यह सिद्धांत के स्थान पर अभ्यास का विषय है, तथा वे भिन्न-भिन्न विषयों को बड़े स्तर पर भिन्न-भिन्न तरीके से निपटते हैं। इस बात पर ध्यान दिया जाना चाहिए कि जिस प्रकार जीव विज्ञान की दो शाखाएं वनस्पति विज्ञान एवं प्राणी विज्ञान हैं, ठीक उसी प्रकार समाज के अध्ययन हेतु समाजशास्त्र और मानव विज्ञान दो शाखाएं हैं। मानव विज्ञान एवं समाजशास्त्र मनुष्य के सामाजिक व्यवहार की व्याख्या और वर्णन करने हेतु तुलनात्मक रूपरेखा प्रदान करते हैं। हालांकि विभिन्न ऐतिहासिक परिस्थितियों के प्रतिउत्तर में प्रत्येक शाखा का उदय हुआ और विभिन्न परंपराओं के प्रभाव और दृष्टिकोण से उनके परिणाम कुछ हद तक सामने आए, इन दोनों शाखाओं का उदय साझे सिद्धांत से

हुआ और तीव्र गति से ये अनुसंधान पद्धति के सामान्य साधन (टूलकिट) बन गए। मानवविज्ञान एवं समाजशास्त्र के अध्ययन के बाद कोई भी व्यक्ति विश्व के सभी क्षेत्रों के मानव समाजों के वृहद रूप से परिचित हो जाएगा। मानवविज्ञान एवं समाजशास्त्र के अध्ययन के बाद वे सांस्कृतिक जटिलता, ऐतिहासिक संदर्भ एवं वैश्विक संपर्क संबंधी ज्ञान प्राप्त करेंगे जिसके आधार पर समाज एवं सामाजिक संस्थान एक दूसरे से जुड़ते हैं। वे समसामयिक समाजों से जुडे हुए सामाजिक संरचनाओं एवं उनके क्रिया-कलापों के बारे में भी जानकारी प्राप्त करेंगे, जिसमें किसी भी समाज में मौजूद सामाजिक ताकत एवं विशेषाधिकार शामिल हैं। वे इस बारे में भी जान पाएंगे कि किस प्रकार अक्सर असमान ताकतों को प्राप्त किया जाता है, उन्हें कायम रखा जाता है, उन्हें पुर्नस्थापित और हस्तांतरित किया जाता है।

मानव विज्ञान भिन्न-भिन्न मनुष्यों का तुलनात्मक अध्ययन है। जिसका उद्देश्य मानव समूहों की समानताओं और भिन्नताओं का वर्णन और विश्लेषण करना है। मानवविज्ञानी इस बात में रूचि रखते हैं कि, किसी विशिष्ट मानव समाज में कौन सी बात विशिष्ट है अथवा कौन सी बात सभी पर लागू होती है। वे इस बात में रूचि नहीं रखते हैं कि कौन सी बात असामान्य एवं व्यक्तिगत रूप से अद्वितीय है। मनुष्य की भिन्नताओं का अध्ययन करते हुए मानवविज्ञानी इस बात पर बल देते हैं कि विभिन्न समूहों में क्या भिन्नताएं हैं न कि उन समूहों में रहने वाले विभिन्न लोगों के बीच में क्या भिन्नता है। मानवविज्ञानी मानव की भिन्नताओं का वर्णन करते हुए मानव जीवविज्ञान एवं साझा मानव व्यवहार के तौर-तरीकों को एक साथ जोड़कर देखते हैं ,जिसे हम संस्कृति कहते हैं। मानव के अध्ययन के लिए मानवविज्ञानियों के पास सम्रग दृष्टिकोण होने के नाते वे मनुष्य के सभी क्रिया-कलापों में अभिरूचि रखते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

1. सामाजिक मानव विज्ञान विषय हेतु तुलनात्मक समाजशास्त्र का सिद्धांत किसने सुझाया?

   ....

   ....

   ....

2. समाजशास्त्र की विषय–वस्तु क्या है?

   ....

   ....

   ....

   ....

3.2 मनोविज्ञान के साथ संबंध

किसी के व्यक्तित्व की अवधारणा को मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार कहते हैं। संस्कृति के संदर्भ में व्यक्तित्व को परिभाषित करने के लिए मानवविज्ञानी इस शाखा का संदर्भ ग्रहण करते हैं। गत कुछ वर्षों में व्यक्तित्व की संरचनाओं के अध्ययन हेतु कई महत्वपूर्ण दृष्टिकोण उभर कर सामने आए हैं। सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत व्यक्तित्व गठन की प्रक्रिया का अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में समाजीकरण और संस्कृतिकरण की मुख्य

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

अवधारणाओं का इस्तेमाल किया जाता है। व्यक्तित्व विकास के लिए भिन्न-भिन्न समाजों में बच्चों के पालन-पोषण के भिन्न-भिन्न तौर-तरीकों और उनके प्रभावों का अध्ययन और जांच की जाती है।

संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि व्यक्तित्व द्वारा संस्कृति प्रतिबिंबित होती है, और संस्कृति व्यक्तित्व में झलकती है। मनो–मानवविज्ञानी किसी समाज के सांस्कृतिक संस्थानों को दो वर्गों – प्राथमिक अथवा मूलभूत तथा सहायक अथवा प्रक्षेपी में विभाजित करते हैं। इनमें से पूर्ववर्ती में भौगोलिक वातावरण, अर्थव्यवस्था, परिवार, सामाजीकरण की प्रथा, राजनीति शामिल है। जबकि उत्तरार्ध में मिथक, लोकगीत, धर्म, जादू–टोना, कलाएं आदि शामिल हैं। जहाँ मूलभूत संस्थान व्यक्तित्व को निखारते हैं, वहीं व्यक्तित्व द्वारा सहायक संस्थाओं का निर्माण होता है। मनो–मानवविज्ञानियों द्वारा दुनिया के प्रत्येक समाज की संस्कृति और व्यक्तित्व के बीच के संबंध का अध्ययन किया जाता है। मनो–मानवविज्ञानी द्वारा 1920 के दशक तक व्यापक अध्ययन नहीं किए गए थे। कुछ विद्वानों के प्रारंभिक कार्यों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण की कमी भी थी। मानव एवं व्यक्तिगत आवश्यकताओं के बीच जो अनेक मूलभूत मानव संघर्ष हैं उनकी व्यक्तिगत स्तर के साथ–साथ सामाजिक स्तर पर भी पूरी तरह जांच होनी चाहिए। इस बात की आवश्यकता को अवश्य महसूस किया गया परंतु न तो मनोवैज्ञानिक और न ही मानवविज्ञानी एकल रूप से सभी समस्याओं का निदान एक ही अनुशासन के समर्थन में कर सकते थे। इस जानकारी ने मनोवैज्ञानिकों एवं मानवविज्ञानियों के बीच दो–तरफा प्रयास की जरूरत को जागृत किया।

अपनी प्रगति की जांच करें

3. मनोवैज्ञानिक अध्ययन का आधार क्या है?

....

....

....

....

4. मनोवैज्ञानिक मानवविज्ञानियों द्वारा किस बात पर बल दिया जाता है?

....

....

....

3.3 इतिहास के साथ संबंध

मानव विज्ञान एवं इतिहास द्वारा संस्कृति के मूलाधार, विस्तार एवं विकास का पता लगाया जाता है। यहाँ हमारा तात्पर्य उस युग के बारे में बात करना। जिसमें मनुष्य संचार करने हेतु भाषा का उपयोग नहीं करता था और न ही उसे भाषा को लिखने की दक्षता प्राप्त थी। पुरातत्त्वविदों को मानवविज्ञान के इतिहासकार कहा जाता है क्योंकि वे मनुष्यों की पूर्व घटनाओं का पुर्नसृजन करने का प्रयास करते हैं। हालांकि, इतिहास के विपरीत जो गत केवल 5000 वर्षों से संबंधित है और जिसमें मनुष्य ने अपनी उपलब्धि के रूप में लिखित सामग्री को

हमारे लिए छोड़ा है। जबकि पुरातत्त्वविदों का संबंध उन लाखों वर्षों से है जिसमें मनुष्य ने लिखित शब्दों के बिना संस्कृति को विकसित किया और हमारे लिए अलिखित सामग्री अथवा कलाकृतियों को छोड़ गए हैं।

इसका तात्पर्य यह है कि मानवविज्ञानी अतीत की संस्कृतियों का अध्ययन करते हैं एवं अतीत में लोगों द्वारा उपयोग किए जाने वाले उपकरणों का विश्लेषण करके उन लोगों की तकनीक के बारे में हमें बताते हैं। इसे आधार बनाते हुए यह उन लोगों के आर्थिक प्रयासों पर प्रकाश डाल सकता है जिन लोगों ने वास्तव में ही उस तकनीक का उपयोग किया है। उन लोगों की कलात्मक दक्षता का पता उनके द्वारा बनाए गए विभिन्न सामग्रियों के अवशेष एवं मिट्टी के बर्तन, आभूषण आदि पर उकेरी हुई कलाकृतियों के अवशेषों को देखकर लगाया जा सकता है। उनके घरों के अवशेष इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि उस समय सामाजिक संरचना का स्वरूप कैसा था। उनकी धार्मिक मान्यताओं के कुछ पहलुओं का पता शमशानों के साथ–साथ मृत व्यक्ति के साथ दफनाई गई सामग्रियों को देखकर लगाया जा सकता है।

अतः पुरातात्विक मानवविज्ञानियों का मुख्य तरीका प्राचीन कलाकृतियों का उत्खनन है जिसमें उत्खनन के बाद उस कलाकृति की काल अवधि का अनुमानित समय निर्धारित किया जाता है तथा सांस्कृतिक इतिहास के निर्माण के लिए विभिन्न अनुमान लगाए जाते हैं। ऐसा करते समय इन सभी प्रयासों में मानवविज्ञानी गत संस्कृतियों के पुनर्निर्माण से संबंधित अध्ययनों पर अन्वेषण के विभिन्न तरीकों से ध्यान केंद्रित करते हैं, जो बहुत प्रसिद्ध सामग्रियों से अज्ञात का पता लगाने का ज्ञात तरीका है।

अपनी प्रगति की जांच करें

5. मानवविज्ञानियों एवं इतिहासकारों का एक समान अध्ययन क्षेत्र क्या है?

 ....

 ....

 ....

6. मानव अतीत की किस अवधि तक का अध्ययन इतिहासकारों द्वारा किया जाता है?

 ....

 ....

 ....

7. पुरातात्विक मानवविज्ञानियों द्वारा मुख्य रूप से किस विधि का उपयोग किया जाता है?

 ....

 ....

 ....

 ....

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

3.4 अर्थशास्त्र के साथ संबंध

आर्थिक मानव विज्ञान विभिन्न संस्कृतियों की आर्थिक प्रणालियों का तुलनात्मक अध्ययन है। आर्थिक लेन–देन एवं आर्थिक प्रक्रिया की प्रकृति में उत्पादन, खपत, वितरण एवं उत्पादों का आदान–प्रदान सम्मिलित है।

मानवविज्ञानी मुख्य रूप से जनजातियों एवं किसानों में इन गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। वे रीतियों के आदान–प्रदान सहित आदान–प्रदान के विभिन्न तरीकों पर का अध्ययन करते हैं। यहाँ पारस्परिकता एवं पुनर्वितरण का सिद्धांत महत्वपूर्ण है। व्यापार एवं बाजार प्रणाली का माहौल भी उनके अध्ययन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। अंततः इन समाजों में अर्थव्यवस्था की प्रगति एवं विकास का अध्ययन किया जाता है। वह बात जो यहाँ ध्यान देने योग्य है वह यह है कि मानव के आर्थिक कार्यों का अध्ययन अलग से नहीं किया जाता है अपितु उसका अध्ययन सामाजिक–सांस्कृतिक कारकों पर प्रकाश डालते हुए उनके सामाजिक–सांस्कृतिक माहौल के साथ किया जाता है। जो प्रत्येक समाज में आर्थिक गतिविधियों की स्थापना करते हैं और उनमें बदलाव भी करते हैं। इस प्रकार के प्रयासों ने औपचारिकवादियों एवं साजिशवादियों के मध्य बहस को बढ़ाया है अर्थात् जो लोग इस बात को मानते है कि अर्थशास्त्र की इस दिशा में तैयार अवधारणाएं भी सरल समाजों में आर्थिक प्रक्रियाओं को शोधन में पर्याप्त हैं, और जो लोग इस बात से असहमत हैं कि प्रत्येक समाज की अर्थव्यवस्था, संस्कृति में निहित है। इसलिए आर्थिक सिद्धांत मौजूदा मुद्रीकृत प्रणालियों के रूप में केवल दिमागी उपज मात्र है। जिससे सरल समाजों की यथार्थवादी स्थिति प्राप्त नही होती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

8. आर्थिक मानव विज्ञान से क्या तात्पर्य है?

....

....

....

....

....

3.5 राजनीतिक विज्ञान के साथ संबंध

राजनीतिक मानवविज्ञान निम्नलिखित पहूलओं पर बल देता हैः राजनीतिक प्रक्रिया की सर्वव्यापकता और वैद्य प्राधिकरण के कार्यय सरल समाजों में कानून, न्याय और प्रतिबंधय समतावादी और वर्गीकृत समाजों में राजनीतिक संगठनय शक्ति और नेतृत्व का स्थानय विश्व के समस्त समाजों के बीच मतभेदों एवं एकरूपताओं के आधार पर राजनीतिक ढांचों के वर्गीकरण, सृजन में मानव विज्ञान से संबंधित दृष्टिकोणय उभरते हुए देशों और जटिल समाजों के मध्य राजनीतिक प्रक्रियाय राजनीतिक संस्कृति एवं राष्ट्र निर्माण प्रक्रियाएं। इन सभी पहलुओं के अध्ययन में विश्व की राजनीतिक प्रणालियां सामाजिक, सांस्कृतिक बातों के अंतर्गत आती हैं।

सामाजिक संगठन के व्यापक अवलोकन के तथ्यों का एक भाग मानव का मानव के साथ संबधों से है जोकि समाज और बाह्य सदभावना में आंतरिक क्रम की निरंतरता हेतु योजनाबद्ध है। इनमें से पहले वाले को कानून और व्यवस्था उपकरण, विवादों के निर्णय और न्याय के कार्यान्वयन की किसी प्रणाली के माध्यम से अर्जित किया जाता है और बाद वाले को शांति और युद्ध के परिणामों से अर्जित किया जाता है। मानवविज्ञानी जो सरल समाजों और अन्य समाजों के मध्य प्राधिकरण से जुडे हुए इन सभी तथ्यों और प्रणालियों का अध्ययन करते हैं उन्हें राजनीतिक मानवविज्ञानी कहा जाता है। राजनीतिक मानवविज्ञान सामाजिक– सांस्कृतिक मानवविज्ञान की एक शाखा के रूप में उभरकर सामने आया है जो कि मुख्य रूप से राजनीतिक संस्थानों और संस्कृतियों से जुडे अन्य क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है। इसे राजनीतिक संगठनों के अंतःसांस्कृतिक और तुलनात्मक अध्ययन के नाम से जाना जाता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

9. राजनीतिक मानवविज्ञान का क्या तात्पर्य है?

....

....

....

3.6 प्रबंधन विज्ञान के साथ संबंध

वर्तमान समय में संपादकों और विद्वानों के मध्य विज्ञान और प्रौद्योगिकी के माध्यम से मानव संबंधों में किए गए बदलावों की भर्त्सना (कमचसवतम) करने की प्रवृत्ति रही है, यदि हम मानवता की ओर वापस आते हैं और विज्ञान का प्रयोग कम करते हैं तभी मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। हम सभी यह देखते हैं कि प्रौद्योगिकी में बदलाव व्यक्तियों और समूहों के संतुलन को भंग करके अपने परिणामों को पूरा करती हैं। यदि हम प्रौद्योगिकी को अपने साथ आगे ले जाना चाहते हैं तो इसे केवल मानव संबंधों के विज्ञान का प्रयोग करते हुए मानवविज्ञान पद्धतियों का इस्तेमाल करके ही किया जा सकता है। इसने प्रशासकों और दूसरे लोगों को भी इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए प्रेरित किया है। यह न केवल वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु अपितु मानव व्यवहार और संबंधों से जुडे मानवविज्ञान के ज्ञात सिद्धांतों के संदर्भों के माध्यम से अपने उद्देश्य निर्माण करने की कला सीखने के लिए है ।

इसके अलावा, मानव विज्ञान पद्धति और सिद्धांतों का उपयोग प्रशासकों को संस्थान में मानव संबंधों की प्रणाली में संतुलन की स्थिति का अनुमान लगाने में सक्षम बनाता है जिसके लिए वह जिम्मेदार है और आवश्यकतानुसार ऐसे समायोजन करते रहते है। मानव संबंधों के समायिक मूल्यांकन के माध्यम से नियंत्रण के तरीकों को स्थापित करके और किसी भी समय समायोजन की सटीक प्रकृति का निर्धारण करके वे संगठन को पूरा करने में सक्षम होंगे और इसे निर्मित करने वाले सभी व्यक्तियों के लिए अधिक संतोषजनक समायोजन ला सकेगें । हाल ही में प्रबंधन विज्ञान ने इस क्षेत्र को विकसित किया है और मानवविज्ञान पृष्ठभूमि के छात्रों का प्रवेश बढ़ा है। अंतर्वैयक्तिक संबंध और मानव संबंधों के अतिरिक्त दोनों विषय समाज से संबंधित शोध की व्यवहारिकता पर बल देते हैं। यात्रा प्रबंधन, ग्रामीण प्रबंधन, वन्य जीवन प्रबंधन,आपदा प्रबंधन, पर्यावरण प्रबंधन आदि इस संदर्भ के कुछ उदाहरण हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

10. मानव विज्ञान संबंधी ज्ञान का प्रयोग प्रबंधन विज्ञान में कैसे किया जाता है?

....

....

....

3.7 जैवविज्ञान के साथ संबंध

जैविक मानव विज्ञान के अंतर्गत मनुष्य का एक जीव के रूप में अध्ययन किया जाता है। होमोस्पेसियन की प्रजातियाँ मानव विज्ञान की इस शाखा के जांच की विषय वस्तु हैं। मनुष्य के अध्ययन से जुडे तीन अहम पहलू हैं। वे पहलू हैं: मानव जीव विज्ञान, मानव का विकास और मानव की विविधता। जैविक पहलू में संरचनात्मक, शारीरिक और शब्द–संरचनात्मक (morphological) विशेषताएं सम्मिलित हैं। मानव आनुवांशिकी और मानव की किस्मों का अध्ययन दो महत्त्वपूर्ण क्षेत्र हैं जो मानव जीव विज्ञान, विकास और विविधता की जानकारी प्रदान करते हैं। तथापि ये सभी अलग–अलग दृष्टिकोण मनुष्य की जैव भौतिक प्रकृति पर समग्र रूप से प्रकाश डालते हैं।

कोई यह सवाल कर सकता है कि मानव विज्ञान की यह शाखा जैवविज्ञान से किस प्रकार अलग है क्योंकि इसमें भी मनुष्य का जीव के रूप में अध्ययन किया जाता है। यह मनुष्यों की जीवविज्ञान पर व्यापक प्रभाव और संस्कृति के प्रभाव की मान्यता है जो शारीरिक मानव विज्ञान को विशिष्ट बनाती है। मानवविज्ञानी हेतु बहस और चर्चा का सबसे महत्त्वपूर्ण मुद्दों में से एक मुद्दा उसके संबंधों (लिंक) का गुम होना है। जीव के वे जीवाश्म अवशेष जो मानव के पूर्वजों की भांति लंगूर और मानव के बीच प्रारंभ और अंतर की वास्तविकता को बताने में सहायता करेंगे जिन्हें अभी तक सर्वसम्मति से न ही ढूँढ़ा गया है और न ही उसे स्थापित किया गया है।

जैववैज्ञानिकों द्वारा विकसित ऑर्गेनिक विकास के सिद्धांतों को मानवविज्ञान अध्ययन में शामिल किया गया है। लैमार्कवाद, डार्विनवाद और सिंथेटिक सिद्धांत जो दूसरे जीवों से प्राप्त प्रमाणों पर आधारित हैं वे मनुष्य की विकास वाली प्रक्रियाओं को समझने में महत्वपूर्ण हैं जोकि अपने आप में जैविक जीव भी हैं। जैविक विज्ञान से अर्जित सूचना के आधार पर मनुष्यों के जैविक विकास के सांस्कृतिक पहलुओं की खोजबीन की जाती है।

अपनी प्रगति की जांच करें

11. जैविक मानव विज्ञान में किस बात पर बल दिया जाता है?

....

....

....

....

....

12. मनुष्य के उन तीन महत्वपूर्ण पहलुओं का नाम बताएं जिसका जैविक मानवविज्ञानी अध्ययन करते हैं?

....

....

....

....

3.8 भाषा विज्ञान के साथ संबंध

मनुष्य की सबसे अहम विशेषताओं में से एक विशेषता भाषा के माध्यम से बातचीत करने की दक्षता है। सामाजिक– सांस्कृतिक मानव विज्ञान की वह शाखा जो मनुष्य की भाषाओं का अध्ययन करती है उसे भाषा–मानव विज्ञान कहते हैं। भाषा–मानवविज्ञानी दो प्रकार से भाषाओं की विविधता की जांच करते है

(1) यह दर्शाया जा सकता है कि संस्कृति भाषा की संरचना और विषय वस्तु को प्रभावित करती है तथा एक अनुमान से भाषागत विविधता सांस्कृतिक विविधता से आंशिक रूप से उत्पन्न होती है।

(2) यह भी दर्शाया जा सकता है कि संस्कृति के दूसरे पहलुओं को भाषागत विशेषताएं प्रभावित करती हैं।

भाषा और संस्कृति के अंर्तसंबंधों को उजागर करने के लिए मानववैज्ञानिकों ने उपरोक्त दो तरीकों का प्रयोग किया है जिसके फलस्वरूप इस विषय पर वाद–विवाद और चर्चाएं हुई हैं। भाषा–मानवविज्ञानी सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी से बहुत कुछ ग्रहण करते हैं साथ ही उन्हें बहुत सी जानकारियाँ प्रदान करते हैं। प्रत्येक भाषा में शब्दों और वाक्यांशों के अर्थ एवं सामग्री में कुछ अनूठी बारीकियां होती हैं जिसे केवल वही लोग समझते हैं जोकि उस विशेष भाषा को बोलते और व्यवहृत करते हैं और जो उनकी संस्कृति की उत्पत्ति होती है। कुछ लोगों की भाषा में उनके इर्द–गिर्द की दुनिया की कुछ विशेषताओं हेतु संदर्भित शब्द नहीं हो सकते हैं। ये उन विशेषताओं को इंगित करते हैं जिनका उन लोगों के लिए कोई सांस्कृतिक महत्व नहीं होता है।

भाषाविदों और भाषा–मानवविज्ञान विद्वानों के मध्य सबसे बड़ी भिन्नता यह है कि इनमें से पहले वाला मुख्य रूप से अध्ययन के बारे में चिंतित होता है कि विशेष तरीके से लिखे गए भाषाओं का स जन और संरचना कैसे की गयी है परंतु भाषा–मानवविज्ञानी अलिखित भाषाओं और लिखित भाषाओं दोनों का अध्ययन करते हैं। भाषाविदों और भाषा –मानवविज्ञानविदों के मध्य एक और प्रमुख अंतर यह है कि पहले वाले में जिन विशेषताओं की मंजूरी दी जाती है उन पर बाद वाले में विचार–विमर्श किया जाता है। ये विशेषताएं ज्ञान, विश्वास, मान्यताओं और सम्मेलनों की प्रणालियों से संबंधित हैं जो विशेष रूप से लोगों के मस्तिष्क में विशेष विचारों को जागृत करती हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

13. भाषा वैज्ञानिक मानवविज्ञानी भाषा की विविधता का किस रूप में आकलन करते हैं?

....

....

....

14. भाषाविदों और भाषा –मानवविज्ञानी के मध्य सबसे बड़ा अंतर क्या है?

....

....

....

3.9 जनसांख्यिकी के साथ संबंध

जनसांख्यिकी सांख्यिकीय रूप से प्रभावित है और प्रमुखतः जनसंख्या के आकार और उनकी संरचना को परिभाषित करने वाली जीवंत शक्तियों और समय तथा स्थान से परे उनकी विविधता से संबंधित होती है। दूसरी ओर मानवविज्ञानी व्याख्यात्मक होते हैं और सामाजिक संगठन पर नजर रखते हैं, कि यह मानव जनसंख्या के उत्पादन और प्रजनन को किस प्रकार आकार प्रदान करते हैं। मानवविज्ञान, जनसांख्यिकीय विषय का एक भाग होता है जो मौजूदा और पिछली जनसंख्या में जनसांख्यिकीय मुद्दों के बेहतर सुधार हेतु मानवविज्ञान सिद्धांत और तरीकों से तथ्य एकत्रित करता है। इसका प्रारंभ और उन्नयन सामाजिक, सांस्कृतिक मानव विज्ञान और जनसांख्यिकी के मध्य स्थान पर हुआ जिसका मुख्य बल प्रवासन पर रहता है, जनसंख्या विशेष रूप से प्रजनन क्षमता और मृत्यु–दर पर बल देती है। कुछ बहुत अच्छे जनसांख्यिकीयविद् विभिन्न मानवविज्ञान पद्धतियों के इस्तेमाल द्वारा संस्कृति के अध्ययन की ओर रूख कर गए हैं। इन दोनों शाखाओं ने एक दूसरे की मदद लेना प्रारंभ कर दिया है। जनसंख्या अध्ययन में इन दोनों विषयों में कुछ सामान्य हितों का आदान–प्रदान किया जाता है।

मानव विज्ञान जनसांख्यिकी में सबसे प्रमुख सैद्धांतिक अवधारणा जिसको सुलझाया जाता है वह है, लैंगिक संस्कृति और राजनीतिक अर्थव्यवस्था। फील्डवर्क और अनुभवजन्य दृष्टिकोण में अनुसंधानों पर लागू मात्रात्मक और गुणात्मक पद्धतियाँ शामिल हैं। इस दृष्टिकोण के लिए एथ्नोग्राफिक फील्डवर्क और प्रतिभागी अवलोकन आवश्यक हैं। जनसांख्यिकी विविध मानव आबादी का सांख्यिकीय अध्ययन है। इसे एक बहुत ही सामान्य विज्ञान के रूप में माना जा सकता है जिसे किसी भी तरह की गतिशील जीवित आबादी के लिए कार्यात्मक रूप से लागू किया जा सकता है।

अपनी प्रगति की जांच करें

15. जनसांख्यिकी का क्या तात्पर्य हैं?

....

....

....

3.10 दर्शनशास्त्र के साथ संबंध

मानव विज्ञान और दर्शनशास्त्र दोनों विषय एक दूसरे से जुड़े हुए हैं क्योंकि दोनों का तार्किक बुनियाद है। इन दोनों समृद्ध विषयों की सीमाएं सदैव भंग होती रही हैं। जैसा कि इससे पहले की इकाईयों में चर्चा की जा चुकी है कि मानवविज्ञान की विषय–वस्तु विश्व भर में विभिन्न संस्कृतियों से संबंधित है। सभी संस्कृतियों के धार्मिक आधार को इन दोनों विषयों के अंतर्गत समाहित करके अध्ययन किया जाता है। मानवविज्ञानविद् कई बार अपना ध्यान दर्शनशास्त्र पर केंद्रित करते हैं और दर्शनशास्त्र की विषयवस्तु को ग्रहण करते हैंय इसी प्रकार अन्य विषयों ने सदैव मानवविज्ञान के निष्कर्षों पर विश्वास किया है। मानवविज्ञानविदों ने सदैव संस्कृ ति की दार्शनिक बुनियाद को मौजूदा संस्कृति और लोगों के वर्तमान वास्तविक जीवन के संग नृवंशविज्ञान (एथेनोग्राफी) की पारंपरिक विधि से जोड़ने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त यदि हम मानवविज्ञान के साथ दर्शनशास्त्र या दर्शनशास्त्र के संयोजन में समाजविज्ञान के बारे में बात करते हैं तो हम यह पाते हैं कि उन्होंने इसमें सहायता की है। जो इस क्षेत्र में निष्पक्ष होने के वर्तमान विचार का वर्णन करने के लिए तथा किसी गैर–नृवंशविज्ञान केंद्रीत दृष्टिकोण जो कई समकालीन सामाजिक वैज्ञानिकों के लिए अपरिचित थे उसमें भी सहायता की है।

अपनी प्रगति की जांच करें

16. यह बताएं कि निम्नलिखित कथन सही या गलत हैं: ''मानव विज्ञान और दर्शनशास्त्र एक दूसरे से संबधित हैं क्योंकि दोनों का तार्किक आधार है।''

    ....

    ....

    ....

3.11 सांस्कृतिक अध्ययन के साथ संबंध

सामाजिक सांस्कृतिक मानव विज्ञान में मनुष्यों और उनके जीवन के तरीकों का अध्ययन किया जाता है। मानव विज्ञान की इस शाखा के अंतर्गत दो उप–शाखाएं हैं जिसे सामाजिक मानव विज्ञान और सांस्कृतिक मानव विज्ञान कहा जाता है जोकि आपस में जुडी हुई हैं और अंर्तनिहित हैं। जहाँ सामाजिक मानव विज्ञान का संबंध इस बात से है कि लोग खुद को कैसे समूह से जोड़ते हैं जबकि, सांस्कृतिक मानव विज्ञान लोगों की आदतों और रीति–रिवाजों से जुड़ा हुआ है। सामाजिक मानवविज्ञानी के मस्तिष्क में समाज की अवधारणा सर्वोपरि होती है तथा संस्कृति की अवधारणा सांस्कृतिक मानवविज्ञानी के लिए महत्वपूर्ण होती है। 'समाज' एक ही स्थान पर रहने वाले लोगों के समूह को इंगित करता है और समाज जीवित होते हैं। 'संस्कृति' समाज के किसी सदस्य के रूप में मानव द्वारा अर्जित किए गए व्यवहार, ज्ञान, विश्वास, नैतिकता, मूल्य, कला और अन्य सभी रीति–रिवाजों को दर्शाती है जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक समाजीकरण और संस्कृतिग्राह्यता (Enculturation) संवर्धन की प्रक्रिया के माध्यम से पहुँचता है।

मानवविज्ञानी का कार्य मानवता के बारे में सामान्य और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समाज और संस्कृति का अध्ययन करना है इस कार्य में दो अहम बातें शामिल हैं; 1– लोगों की इस धारणा को निर्धारित करने के लिए कि उन्हें किस प्रकार का होना चाहिए, तथा 2– यह बताना कि लोग वास्तव में कैसे हैं? सामाजिक सांस्कृतिक मानवविज्ञानी लोगों के समाज और संस्कृति

के किसी क्षेत्र की विशेषताओं को खोना नहीं चाहते। इस प्रकार समाज के अंदर किसी व्यक्ति के जीवन में, गर्भावस्था, यौनावस्था, युवावस्था, मृत्यु से विवाह तक सभी विशेषताएं जो संस्कृति विशिष्ट हैं जिसमें किसी व्यक्ति के जीवन चक्र में प्रत्येक घटना से संबंधित अनुष्ठान और समारोह सम्मिलित हैं उनका सांस्कृतिक अध्ययन के अंतर्गत अध्ययन किया जाता है।

मानव समाज और संस्कृति में जीवन के सभी क्षेत्रों के बारे में जो जानकारी सामाजिक–सांस्कृतिक मानववैज्ञानिक एकत्रित करते हैं, वे वर्गीकृत, संगठित होती हैं तथा मानव जाति के सिद्धांतों के सृजन के लिए उनका विश्लेषण किया जाता है। मानव विज्ञान के सिद्धांत का इतिहास मानव संस्कृतियों के मूल, प्रसार, विकास, संरचना और कार्य हेतु उत्तरदायी विभिन्न प्रयासों को प्रदर्शित करते हैं।

अपनी प्रगति की जांच करें

17. सांस्कृतिक अध्ययन में किस बात पर बल दिया जाता है?

....

....

....

3.12 सारांश

मानव विज्ञान का अर्थ और उद्देश्य मानव का वैज्ञानिक अध्ययन है। उनके संबंध में मानव की अंर्तनिहित जिज्ञासा वह प्रमुख कारक थी जिसने इस विषय के उद्भव को प्रभावित किया जिसमें व्यवस्थित रूप से मानव जाति का अध्ययन किया गया। मानव विज्ञान अध्ययन के अंतर्गत इस बात का उत्तर ढूँढने का प्रयास किया गया कि मानव कौन है, वह कैसे विकसित हुआ, वह एक विशिष्ट तरीके से कैसे व्यवहार करता है। मनुष्य का अंतिम उद्देश्य केवल मनुष्य, समाज और संस्कृति के बारे में ज्ञान अर्जित करने तक नहीं है अपितु विश्व भर में मानव जाति द्वारा किए जाने वाले व्यावहारिक समस्याओं को दूर करने हेतु ज्ञान को लागू करने में है। इस प्रयास हेतु मानवविज्ञानी आमतौर पर सरकार के प्रशासकों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर कार्य करते हैं। मानव विज्ञान समग्र रूप से मानवता को समझने में अभिरूचि रखता है। मानव विज्ञान का संबंध विश्व भर की जनसंख्या चाहे वह बड़ी हो या छोटी, उससे है और कालांतर सहित वर्तमान में भी है।

3.13 संदर्भ

बील्स, आर.एल. होइजर, एच. एवं बील्स, ए.आर. (1959). *एन इन्ट्रोडक्शन टू एंथ्रोपोलॉजी.* न्यूयॉर्कः मैकमिलन पब्लिकेशन कंपनी.

गीर्टज, सी. (1995). *ऑफ्टर द फैक्टः टू कंट्रीज, फोर डीकेड्स, वन एंथ्रोपोलॉजिस्ट.* कैम्ब्रिज, एम ए. हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

होबेल, ई.ए. (1958). एंथ्रोपोलॉजीः द स्टडी ऑफ मैन. न्यूयॉर्क : मैकग्रा–हिल पब्लिकेशन.

लेसवेल, हैरोल्ड डी. (1950). *कंटेम्प्रेरी पोलिटिकल साइंसः ए सर्वे ऑफ मैथड्स, रिसर्च एंड टीचिंग.* यूनेस्को पब्लिकेशन.

मायर, लुसी. (1972). *एन इन्ट्रोडक्शन टू सोशल एंथ्रोपोलॉजी.* दिल्ली, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

3.14 आपकी प्रगति की जांच करने के लिए उत्तर

1. ए.आर. रैडक्लिफ–ब्राउन ने इस बात का सुझाव दिया है कि सामाजिक मानव विज्ञान को तुलनात्मक समाजशास्त्र कहा जा सकता है।
2. कृपया अनुभाग 3.1 का पहला सारांश देखें।
3. कृपया अनुभाग 3.2 देखें।
4. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
5. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
6. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
7. कृपया अनुभाग 3.3 देखें।
8. कृपया अनुभाग 3.4 देखें।
9. कृपया अनुभाग 3.5 देखें।
10. कृपया अनुभाग 3.6 देखें।
11. कृपया अनुभाग 3.7 देखें।
12. कृपया अनुभाग 3.7 देखें।
13. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
14. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
15. कृपया अनुभाग 3.8 देखें।
16. सत्य ।
17. कृपया अनुभाग 3.11 देखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY